

प्रश्नावली ।

२५

हिंसावाचक-विज्ञान गौरीशंकर मान भाग पाठ्य प्रकाशित हो
 चुक है गौरी भागकायके सामने है। इसमें भक्ति व्यावहारिक
 ज्ञान और भक्तिवाचक विषयों का विज्ञान होमई
 है। इसमें भक्ति विषयों पर व्याख्यान रचवा गया है। इस
 भाग का नाम है यह है कि हमारा गौरीशंकर ज्ञान अर्थ
 विज्ञान है। अब तक उसका सुधार न किया जायगा
 तब तक सामुदायिक उत्पत्ति होना सम्भव है और जानकों के
 भोजन का मत दृश्य-श्रवण म नाति का बाज बना ही गौरीशंकर
 ज्ञान का सुधार का यह मात्र उपाय है। क्योंकि जानकों का भाषा
 सामाजिक ज्ञान का स्वरूप है। हमारा बाज यह है कि विज्ञान
 का उद्देश्य हम गौरीशंकर सुधार है पर पारलौकिक सुधार भी।
 और यह तब ही हो सकता है जब जानकों का पहल म हो नाति
 सुनिश्चित म जानकारों का और साथ ही साथ उसके प्रति अनुमान
 होना है।

दुम्में जानकों का दृश्य म नाति का प्रति अनुमान पदा करने
 के बिना सम्भव है। यह एक सम्भावना है। हम इस सम्भव
 होने का करना आवश्यक सम्भव है कि दुम्में किसी भी विषय
 का ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। विज्ञान ज्ञान द्वारा ही सम्भव
 है। यह विद्याधिषा का ज्ञान ज्ञान का ही कणधार है। ज्ञान
 का ज्ञान का कणधार है जिस पाठ का व पढ़ाई उसका तत्त्व
 विज्ञान का ज्ञान ज्ञान म व्याप्त करे। ज्ञान दुम्मा तो जानकों
 का ज्ञान व्यावहारिक और नातिविपुल होना है।

विषयानुक्रम ।

क्रम विंश	पृष्ठ
१ महा भगवत्	१
२ विन	४
३ महा विन का महा	५
४ अतिविन	७
५ भुव का भुव धान भुव न करना	१०
६ सुभुव	११
७ व्याख्या (१)	१
८ व्याख्या	१३
९ व्याख्या	१५
१० व्याख्या	१३
११ व्याख्या (व्याख्या)	१
१२ भगवान् महावत् (१)	२७
१३ महा न व्याख्या का विन म,	३३
१४ व्याख्या (२)	२५
१५ प्रतिवत्	२७
१६ व्याख्या (१)	३५
१७ विन मनुष्य	४५
१८ भगवान् महावत् (२)	४
१९ व्याख्या (३)	१०
२० व्याख्या (४)	१३
२१ व्याख्या भूत व्याख्या करना	१
२२ व्याख्या (५)	१५
२३ व्याख्या	७
२४ भगवान् महावत् (३)	१५

पद्यभाग ।

कुचनन गलस्ये क वाट (मिचला)	११
२१ माध्यत्रीवन	१३
२३ नीति मोग	१५
२८ गगनका	१७
२१ प्रकीर्णकण	१९
३० गगनका मनुति	२१
३१ गिरगिर की वृषजति	२३





हिन्दी-वाल्-शिक्षा

चौथा भाग



पञ्चला बाठ



मंगी मन्त्रालय

(१)

जिसमें राम ठप कामाग्रि, जग सब जग जान जिया,
सब जोषा का मासमाग का निरपृष्ट हा उपदेश दिया ।
पुष्ट पार चित हटि हर दृष्टा या उमका म्वाधीन कहो,
मफिन-भाय मे प्रेरित हा यद चित उमो म क्षीन रहा ॥

(२)

पियया का आशा नहि जिनक, सावभाय धन रखत है,
निज-पर क हित-साधन म भा, निग दिग तन्पर रहत है ।
म्याध-पाग की बटिग तपस्या, बिना रस जा करते है,
पस ज्ञानी साधु जगत म दुख समुद्र का हरने हैं ॥

(८)

होकर सुख में मग्न न कूनें दुख में कभी न घपराये;
परम नदी समझान भयानक अटवी में नहीं भय खाये ।
रहें अज्ञान अक्षर निरंतर, यह मन रहतर हा-जाये,
एक-द्विषाग अनिष्ट-याग में सहनशीलता दिखलाये ॥

(९)

मुसी रहें सर जीव जगत् के काई कभी न घपराये;
धैर पाप अभिमन छुट जग निय मय मगल भवै ।
घर घर चर्चा रह धर्म की दुष्कृत दुश्चर हो जावै;
ज्ञान अस्ति श्रुत कर अज्ञान मनुष्य—वचन - फल सब पावै ॥

(१०)

इति भाति व्याप नहीं जग में श्रुति समय पर हुआ करे,
धर्म - निष्ठ हाकर राजा भा भ्याय प्रजा का किया करे ।
रोग मरी दुर्मिष्ट न फैल, प्रजा गाति में दिया करे;
परम अहिंसा--धर्म जगत् में फैल सर्वहित किया करे ।

(११)

फैल धर्म परस्पर जग में मोह दूर सब गेट हूँ,
अप्रिय कलक कगेर नाद नहीं काई मुख से दूरा हूँ
धन कर सब युग-भर इत्य स दे-कृति गगन हूँ,
प्रेम-स्वरूप विचार सुखा से सब मन अटल हूँ ॥

—५० तुलसीदास

कारते दूर दिन धनीन हाथों, परन्तु धीरे हाथ न आया।
आमिर सातवीं रात्रि में बड़ा नाचघरानो न कमरबन्दुमार ने धीरे
पकड़ दिया। उसने हाथ डालकर आसपास खोजा भी करा
जिदा। बाद में कमर उस राजा के पास आया। राजा ने आदि
न कमर तब तब राजा सुन शूना का दरद दिया। कमरबन्दुमार ने
बहा—'महाराजा इस शूना इस न परम राजा दिया
संग सरो आदि। कभीदि मारि में बहा है दि—

उत्तम विद्या लक्ष्मिने वदपि भीषण हाथ।

दोरी कामरन टोर में, बचन लक्ष्मि न बाध है॥

कमरबन्दुमार का राजा केवि का जैय न। दर विद्यालक्ष्मि
पर बैठा २ बाटगाज का नख बैठकर विद्या संलग्न लगा।
आमिराज और अदिक राजा ने हा जा ताड़ कमर विद्या पर बने
वह समयमा लक्ष्मि ने धीरे लक्ष्मि मारा। तब राजा न बहक कर
बहा—'ए परगाज मुम विद्या विद्या में भी तु बहक करहा
है' राजा को इस काम पर राजा का निराधार करते देख
कमरबन्दुमार न बहा—'महाराज विद्या का विद्या दिया करो
कामे। यदि कामे विद्या लक्ष्मि है न इसे विद्यालक्ष्मि दे
दे और काम न ये विद्या, तब ही विद्या कामे। जैसे
लक्ष्मि ऊपर से लक्ष्मि का लक्ष्मि है जैसे विद्या भी लक्ष्मि ही काम
है जा लक्ष्मि का ऊपर और काम का लक्ष्मि लक्ष्मि है।
लक्ष्मिने काम विद्या लक्ष्मि का विद्या लक्ष्मि लक्ष्मि। लक्ष्मि
का काम लक्ष्मिने लक्ष्मि ने कामे विद्यालक्ष्मि को कामे पर
विद्यालक्ष्मि लक्ष्मि काम लक्ष्मि है। लक्ष्मि काम लक्ष्मिने विद्यालक्ष्मि
लक्ष्मि का लक्ष्मि है कामे। लक्ष्मि का लक्ष्मि कामे कामे लक्ष्मिने
विद्यालक्ष्मि लक्ष्मि का लक्ष्मि है लक्ष्मि लक्ष्मि कामे लक्ष्मि।

माय-भय है। पुत्र पर माता पिता का सब से अधिक उपकार है-
इतना अधिक कि पुत्र उसमें कभी उल्लास नहीं हो सकता।
जिन्होंने हमें जन्म दिया है उनके उपकार का बदला चुकाने का
विचार ही कैसे किया जा सकता है। इसीलिए समझदार लोग
माता पिता का दया तुल्य समझकर उनकी सेवा करने हैं
उनकी आज्ञा मानने हैं। चाहे किन्ना ही कष्ट क्यों न उठाना
पड़े परन्तु य माता-पिता की भलि अर्पण करना है। इस भलि में
आप चार बातों का समावेश होता है। (१) सम्मान (२) प्रेम (३)
सेवा और (४) आज्ञाशून्यता।

(१) सम्मान—मन में माता-पिता के लिये सम्मान होना
चाहिए क्योंकि उनके घर में कभी कोई अनुचित विचार
न करना और उनके शरीर का मन में स्थान न देना चाहिए। सदा
ध्यान रखना चाहिए कि सब हर समय और हर हाजिरी में हम सदैव
बैठे हैं। माता पिता के साथ बातचीत करने समय एक भी
शब्द मुखता का अपमान का या अनमन भरा न निकलने पाये।
उनके सम्मान से जो कुछ कहा जाय वह डिटार में न कहा जाय कि-
न्तु सयता और विनय से। माता पिता जब पास हो सकें हाँ तक
उठना आदि विचारों से विनय के साथ करना चाहिए। जब—
जब वे हमारे सम्मान से लड़ें हाँ तो हम बैठ न रहें बैठे रहने से उनके
प्रति अपमान का भाव नहीं जाहिर होना।

(२) प्रेम—चाहे हृदय में प्रेम न हो तो सच्चा सुया और
कर्म है। माता पिता दुःख के लिये अथवा परिश्रम करने हैं
किन्तु पुत्र यदि प्रेम न उठती सेवा करें तो उन्हें सब परिश्रम
नहीं मान्य है। जब कभी वे विगति में पड़ें हाँ दुःख का कारण
उत्पन्न हो तो माता पुत्र का प्रेम लाने उनकी आज्ञा का पूरी
शक्ति और हृदय निवेदन है।

को उत्तम बनाना चाहिए। जा मौ-बाप का दयाता समान समझ कर उनकी सेवा करते हैं उनका जीवन पूर्ण सुखमय व्यतीत होता है।

पाठ ४

अतिथिसत्कार

राजक' भारतवर्ष का अनन्य विरतात्मा में से अतिथिसत्कार को प्रवृत्ति का मुख्य है। अतिथिसत्कार भारतीय सभ्यता का प्राण है। प्राचीन काल में अतिथियों का सत्कार करने का सिये लोग लगायित रहते थे। वे सत्कार का अमर पात्र हो अपने को धन्य मानते थे। शास्त्र में अतिथिसत्कार करना मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है। इसमें प्रेम सेवा सहानुभूति और कर्त्तव्यपालन का रहस्य छुट कूटकर भरा है। बिना प्रेम अतिथिया का सत्कार नहीं होता। इसलिए अतिथिसत्कार करने वाले में प्रेम होता ही है या दाना हा चाहिए।

यदि कोई निम्नस्वभाव व्यक्ति मूला भट्टका सड़कों का मारा तुड़ार घर आ पहुँचे तो उसका स्वागत करा। माँट घबरावलो। बैठन को स्थान दा। अन्न हाँसियत क अनुसार दसही आप्यश्च ताओं का पूरा करदा, सभ्यता में दर्जा करा। प्रेमभाव दिस जाया। अहा! यह कितना प्रसन्न होगा उस अन्न भवन होगा और तुम्हें सदा हृदय में आगाय दगा। अहा! हमारे प्रति तुम्हारी सेवा है। दत्ता अतिथिसत्कार और सेवा में कितना अधिष्ठ सम्पन्न है। इस तरह सहानुभूति और कर्त्तव्यपालन गुण का अतिथिसत्कार में हागे चाहिए।

की गुप्त बात प्रकट करना अत्यन्त अनर्थ प्रसिद्ध है। जिसमें यह घुसी जन हो, उस दहा भगवत् सम्मेलन चारिण। बहुत लोग कथित मनाम्जन के लिये घमा करने हैं। उनका मनोरञ्जन कभी २ अप्रसिद्धों का पहाड़ दादना है। एम मयपुर मनोरञ्जन को रीतानी लीला कहना अधिक उचित है। इस दुर्गुण से कभी २ जान जाने तक छानौपन अप्रसिद्धता है। एक कथा है कि-

किसी समय पृथ्वीपुर नामक नगर में सुन्दर नाम का राजा था। एक बार वह राजा वधनिष्ठित (रुलटी गिता पाये हुए) घड़े पर सवार हुआ। वह घोड़ा उसे जगल में लगेगा। जगल तक दौड़ते २ एक जान में वह टहर गया। इसी समय राजा सुन्दर उनका और धकाधट का मारा किसी वृत्त के भाष सोनिया। उसी समय एक हाटा सा सारे गधा के मुख में प्रथम कर गया। राजा लौटकर घर आया परन्तु पेट की पीड़ा के मारे बेचैन होगया। उसने बहुत दान किया पर वह भी कारगर न हुआ। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि प्रदम्याग करने के लिये गंगाजी जाना चाहिए। यह विचार कर वह रानी का साथ लेकर चला। मार्ग में राजा किसी जगह एक बड़ के नीचे सोनिया। उस समय रानी जाग रही थी। पास ही एक बेंशी में कोई सप रटना था। इन्त में वह सप ना राजा के पेट में पुता हुआ था कुछ बाहर निकला। उस समय बाधी में रहा हुआ साथ उसस वाला रट्टे राजा के पेट में बाहर निकला गया सुनहा जानता कि मे तर दिगाता का हलाउ जानता ह। यदि बाद पुरव कइयो कइया की उउ कावा में बाटकर पापाव ता जनायास हा तरा सामा हापाव। यह घमकी सुनकर उसे भी थप आया। उसने उपद्रव कर कहा—जै भी तर माउ का उपाय भनोभोति

१० सन् १५८ की बात है। एक बार दुनगान देग क लिमपन नगर में एक जहाज गल्ला झारहा था। उस जहाज में लगभग बारह सौ मनुष्य थे। रात में मल्लाहों का जहाज गल्ला सबह एक घंटा स टहरा गया। जहाज की वेदा में उदहा जाने स उसमें पानी भर आया। यह देग देख यात्रियों का मानो काट मार गया। उहाज चिन्ही की आवाज ग्या। कप्तान उहाज का चेला असभय जात एक उगा निशान और घंटासा खाने पान का सामान साथ में लेकर खाना हुआ। नय न चाहा कि हम डोंगी पर चढ़ कर अपने जहाजों पर चढ़ें। पर चढ़े हुए लोगों ने नगी नगर स उनका सामना किया और किसी का न जाने दिया। क्योंकि यदि वह जहाज व म स नारी हाजानी ता हूय जाने वा म था। इस प्रकार जहाज उन स आदमियों का डोंगी में देठाकर चला। अब दिगति आता है नय अवली नहीं आता। इसा निदम क अनुसार यही भा आगति पर अपासि जाने लगी। कप्तान शमार हाग्या और नीच हो मर गया। उसके मते हो "तू तू मैं मैं" हाने लगा। अयक अपने को सब का सदार मानने लगा। यह हुदा देख कुछ समझदारों ने एक बड़े आदमी को बजाना सुना।

कुछ दिन बाने। बितार का कहीं पना न चला और खाने पाने का सामान समाप्त होने आया। कप्तान ने कहा-मानव अधिक से अधिक तान दिन चल सकता है। तनी सामग्री से हम सब का निर्वाह होना कठिन है। इसलिए सब क नाम की चिट्ठी डालो जाय और प्रत्येक चौथा चिट्ठी में जिसका नाम निम्न उसे हनु में देकर दिया जाय। इस बात का सब ने स्वीकार किया। सब क नामकी चिट्ठी डाली गई परन्तु कप्तान एक बंदरी और एक बंदर क नाम की चिट्ठी नहीं

मे उसका पदार्थ किया। इस समय कदाचि अपने दुष्टियों का पदार्थ खा था। इनने में ही उसे एक दिन मुनि दृष्टि गावर हुए। उनका पास आकर उसने किया हुए पापों से दुष्टकारा पाने का वषाय पूछा। मुनि बोल—‘एक पुरुष यदि सौ घर तक एक पैर से सदा हाकर तरस्या करे, और दूसरा कर्मन एक सामाधिक करे तो भी वह पहला मनुष्य दूसरे का दरादरी नहीं कर सकता। हे काल! तू सब जान कि सामाधिक की महिमा अरुणागर है’। मुनिराज के पचनाहन मुन केदारी ने तुरन्त सामाधिक ल ला। वह दिखाने लगा—‘अह! मे न कुसंगति में पदकर व्यर्थ हो पाय कर्म किये। मुझे धिक्कार है’। इस तरह हम ध्यान में आकर हाकर कर्मगान प्राप्त किया।

राजा, केदारी का समता और सन्म की मूर्ति देखकर बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ। राजा को चकित हुआ देख मुनिराज बोल—‘महाराज! आप विस्मय क्यों हात है। सामाधिक का महामय ही ऐसा है कि अनाया और अनायागी भी इससे प्रता कल्याण कर सकता है।

मुनिराज द्वारा की हुई सामाधिक की प्रस्ता से अनन्तर राजा न भी प्रतिदिन सामाधिक करने की प्रवृत्ति लेता। केदारी ने अपने नाम को साधन कर दिखाया। उसने अपने धर्म-परायण ने सामाधिक के द्वारा साधु कर्म का प्रवृत्ति कर अनन्त सुखमय मुक्ति को प्राप्त किया। सन्तुष्ट मन्त्रिण्ड के महिमा आर है।

जो इसमें रंग राज्य की अधिकारिणी हुई। रंग राज्य राजा होने पर
 यह काम राज्य करने में सुनसी हुई। यह पार राज्यमन्त्री में शी-
 त्सन्नाह नामक मंत्री बैठा था। उसका सामने रंग ने राजा मंत्री
 [हि] में देखा। मंत्री ने रंग का अन्दरूनी विचार समझ लिया।
 यह बड़ा ही नीलमन्त्र था। उसने साचा-काँट विचार ही बड़े पर
 राज्य की कोठरी में जिना दाग लगा नहीं बच सकता। इसलिये
 मुझे करने प्रयत्न का रक्षा करने के लिये यह स्थान छोड़ देना
 चाहिए। यह विचारकर शीत्सन्नाह अपना आचारिणी का साम
 मारकर वहाँ से चले दिया। सच है सद्यो पुराण करने सदा-
 धर क विवेचना नहीं दूँ देते। अध्यान् ये सब कुछ त्यागकर
 भी सदन की रक्षा करने हैं।

शीत्सन्नाह रंग का राज्य छोड़ अन्यत्र जा विचार
 तार राजा का नौकरी करने लगा। वहाँ रहने में अब कुछ दिन
 बीत गये, तब विचारसार ने उत्तर कहा—“शीत्सन्नाह !
 पहले तुम जिस राजा के यहाँ काम करते थे, उसका क्या नाम
 है ?” शीत्सन्नाह ने उत्तर दिया—“नरनाथ ! मैं ने जिस राजा
 का पहले सेवा की थी उसका नाम भावन करने में पहले
 जना योग्य नहीं है। नाम देने से दिन भर अंध से भेंट नहीं
 होता”। यह कहकर शीत्सन्नाह ने रंग का सिखा दिखता
 दिया। राजा शीत्सन्नाह शीत्सन्नाह का बात सुन बड़ा विस्मय
 हुआ। उसने मंत्री के कथन की जाँच करने के लिये से राज
 सना ही में भोजन का सामान मंगा और हाथ में कौर लेकर
 बोला—“अब उस राजा का नाम तो”। मंत्री ने ज्यों ही
 “दो राजा” कहा त्यों ही दूत ने आकर खबर दी कि “अपने
 नगर का यह राजा मे घेर लिया है”। दूत की बात सुन राजा

विचारमात्र न तुल्य ही कौर थाला मयस्क दिया और सप्राप्त
 लिये मेना सजाकर प्रस्थान दिया। दिन भर गुरुधमासान युद्ध हुए
 गीतमन्त्राद युद्ध का ना करने गया। शत्रु के याज्ञाया न उस
 सामना किया। परन्तु पुण्यामा नहा जान है यहाँ उनका मरि
 हाता है। गामनदेवी न समस्त प्रतिपक्षियों का अभिन कर दिया।
 उसी समय आकाशगणी हुई कि नमानु गोलमन्त्राहाय प्रलय
 भेरजाय। अथान् प्रमथय म आमस्त गोलमन्त्राई का नमस्त
 हा। यगा कदर देवताओं न पूर्वा का बना की। शीलसप्रा
 यकिर हा, यहाँ हा विचार करने लगा था ही उस अग्रविज्ञान
 हागया। अतः तब उगा सामन जा एक प्रकार का परदा प
 यद दूर हा गया। उनके सामने दिव्य प्रकाश प्रकाशित होने लग
 बात उगत अभी समय बगताय किया और मुनिदी
 कीर्तिहा कर लो। अतः म मुनिरान गानसन्नाह प्रलयय के
 माय म मुनि का प्राण हुए।

आर वाजरा! प्रलय की अभिन मदिसा है। एम ल
 और गजान्त दाना का मुख्य गुण बनान के लिए प्रमथय म
 प्रिक अष्टा दूसा उगाय नगी है। प्रमथय म गरीरवन प
 मनावत की प्राप्ति जाता है। ना मगुरुय मम म भा प्रल
 वज्रन है उहे आमयन प्राप्त होता है। प्रमथरा क सामन स
 अदि मिदिया और दयताग हाय बांधे लक्ष रहने
 गतमन्त्रा का म्मा। कहीं ना यनवार सप्राप्त निम
 न मय म हा हाता क तात उक्त जगत है और क
 मे मयन प्रमथ ये द्या का पुनर्पुत्रि कता। यद म
 ह्वय का मग्ना है। मय है— प्रलय म सब सि
 की अजयान ही प्रम हाजगी है।

पाठ १०

सामायिक

पण्डितजी — तुमतिनाल आज पाठशाला में देर से क्या
सच बनाया, रास्ते में चलने लग य?

तुमति०—जी नहीं घर से सीधा यहीं आ रहा हूँ। आज अष्टमी
त काज का सामायिक का थी इसी में इतना अदेर हागई है।

पण्डितजी—बहुत टाक। अच्छा यह बनाया सामायिक क्या
मायिक किस कहत है ?

०—एक जगह आसन बिछाकर बैठ जाय मुखमुखिका ल

बालना, यदि कारगुज्ज चना का काम पड़ तो धरता देख-

ल पर चलना, सामायिक कहनाता है। इस दशा में भय

(मन) नक रहना पड़ता है।

इस

पण्डितजी—तुमतिनाल तुम प्रतिनि सायायिक कह बाह
यह तो क्या अच्छा बात है। किन्तु सामायिक क्यात मय
समककर करा हा खाने में सुगम हो जाय। असन २ ता
पद है कि आसन जमातर येने से हा सामायिक नहीं कह
जाता।

तुमति०—महाराज ! आज हा सामायिक का स्वरूप
बनाने का अनुग्रह काजिये। सामायिक किते कहा है ?

पण्डितजी न मय छात्रों का आर लक्ष्य करके कहा—“विद्या
विद्या। दाना समय सामायिक करना वैनिक बस्य है। यह
पारसे में आचार्यक बस्य दतनाया गया है। आचार्यक बस्य
का रोज २ आचार्य करना चाहिए। किन्तु अब तक उसके सचे
स्वरूप का विदित न कर लिया जाय, तब तक उतना आचार्य

पाठ १०

सामायिक

परिचयज्ञा — 'सुमतिनाल' आन पाठशाला में घर से क्यों
ये' सच बताओ रास्ते में चलने लगे थे?

सुमति०—जो नहीं घर से साधा यही आ रहा हूँ। आन अच्छी
गान जान दा सामायिक की थी इसी में इतनी अवेर हागई है।

परिचयज्ञा—बहुत ठीक। अच्छा यह बताओ सामायिक क्या
सायिक किसे कहते हैं?

०—एक जगह आसा बिहाकर बैठ जाग मुखपरिहा ल
बालन, यदि कारणना चलन का काम पड़ता घरता देख
ल घर चलना सामायिक कहलाना है। इस दान में भय
(मनट तक रहना पड़ता है।) इस

परिचयज्ञा—सुमतिनाल' तुम प्रतिदिन सायिक बहुत
यह ता दहा अच्छा जान है। किन्तु सामायिक कबाल मय
समझकर करा ता सान में सुगव हा जाय। असल में ता
यह है कि आसन जमाने से हा सामायिक नहीं कह
लाना।

सुमति०—महोदय 'आन हा सामायिक का स्वरूप
पताने दा अनुग्रह दाजिद। सामायिक किसे कहते हैं?

परिचयज्ञा न सच छात्रों की आर लक्ष्य करके कहा—'विद्या
धिपा। शोना समय सामायिक करना दैनिक कर्त्तव्य है। यह
मास्को में आचार्य कर्त्तव्य दत्तताया गया है। आचार्य कर्त्तव्य
का राज २ अक्षय करना चाहिए। किन्तु अब तक उसके सचे
स्वरूप का शिदित न कर लिया जाय, सब लफ उठना चाहिए

को और उन्मुख होना आवश्यक है। और सम नाव ही सामायिक है। इसका यह अर्थ हुआ कि मन का धन किये बिना निर्दोष सामायिक नहीं हासिल होता। मन को दम दायों में बसकर मन का पुष्टि-पूर्वक सामायिक करना चाहिए।

सामायिक में मन पुष्टि की ऐसी आवश्यकता है वैसी वचन-पुष्टि की भी। मौन धारण करना सर्वप्रथम है। यदि यह न हासिल होता है तो हिनायत में कामल और सत्य ध्यान ही बालना चाहिए। सामायिक बापों में आदमी उपद्रव न करना चाहिए। असत्य सत्यासत्य—मिथ्य, कथ्ययुक्त ध्यान भी न बालना चाहिए। वचन के दम दायों का परिहार करना आवश्यक है।

सामायिक में अगर पुष्टि गयता भी आवश्यक है। क्योंकि वाक्यान्तर से अनुराग का पुष्टि का स्मरण रहना है। दूसरे शब्दों में यह मत मानें—प्रेमा समस्त करने है। अगर का पुष्टि के साथ वचन उपकरण और गयता का पुष्टि का निश्चय साधक है। इसलिए ये सब पुष्टि होना चाहिए। गृहस्था का अनुराग पुष्टि बाह्य पुष्टि पर निर्भर है। यह बात ज्ञान में रखकर गाम्भीर्य सब विचार आवश्यक में जाना चाहिए।

पाठ ११

देशाटन (गाथा)

मानिद्वारों में दण्डाटन का पडा महान है। मजबूत दण्डाटन करने में बहुत लाल होना है। जब हम दण्डाटन करें तो किसी प्रकार का स्वार्थ मन हो मुक्त हो पर उसमें होने वाले सब लाभों का ध्यान भी ध्यान रखना चाहिए। निम्न २ देशों में

जातिम भा है । अन्तर्गत रज्जुगण क घनन म बुद्ध - आन
दृष्ट कम हागा है । पञ्च लम्पार हाता था और ठगई बहुत
हाता है मुमासिग म जा हागिया हाता है उनका मुख्य आधार
न न बाता पर है । (१) लाभ (२) प्रत्यक्ष्य का निधिजता (३)
अन्तर्धाना ।

(१) लाभ-बहुतर ५५ पाते मारकर जागा का धागा दकर
रग नन है । बाई ५ पातर या लाह का चाचा पर सान का
रग चढ़ा कर और यह प्रकट करके कि यह साना हमें वही पना
दिना है कम मुत्र म रन लगन है । मुमासिग लाभ क जानमें
वसर उस गुणा म खगान और फिर हाथ मारन रह जा
है । बाई २ पृथ अना भय मन आत्मा का सा बना सन
है । २ अन्तु काइ यदिया जून और घड़ा लड़ा स सज्जर
पर प्रकट करत है कि उनका मल अमबाध चाग घना गया
है । इसलिये टिकन लगन क लिय धन का सहायता मागत
है । माजि भान लाग उनका जाजाही नाइ नहा सजन, और
कम जात है । किननर टग साधु सन्यासा का बाता बना कर
किछा गागमटाल लुगिया कालकर कहन है— यह गालिग्राम
जिस घर म रहत है वहा क लग मागमान होजात है । ईम
साधु सन टदर हमारा द्रव्य स सतकार का 'तुम से जो घन
सक अगम धडा क अनुसार वमान (भय) निमान क लिय
घड़ा दा और इनका तुम्हा लाभ उगमा ।

बहुतर आपन म भिन हुए रग हागजात का खल रोजत है
उनमें से किस का पना दख अन्तर्गत आत्मा क मुद में पाना
आजात है । टग लाग एक बार उम भा चिना दन है । यह जीत
क नग म उमस हविर न्यो - अगम सज्जता जाता है त्यों २ हार

मिष्टभाष्य भा अन्यन्त उपयोगी है। यदि हम अलिखित विषयों पर पूर्ण ध्यान रखें तो द्वापर म हान वान बहुत से वषा स मुक्त हो सकत है।

पाठ १२

भगवान् महावीर

(१)

उन स्वयं प्रभु महावीर के चरणों में नमस्कार हो नि होन ससार के प्राणिमा का दुखों व दुन्दुज से निवान कर कक्षय सुख के मार्ग में लगाया।

प्यार बानका 'यह समार सदा स है और सदा रहगा। इसका कभी नाग नहीं होता पणु परिश्रम सदा हुआ करता है। हम परिश्रम व प्रभाव स कभी धम व उग्रति हाती ह व भी पाव बना है। जब भगवान् महावीर का जन्म हुआ तब धम कताम-सा हो रहा था। कहा! यह समय बहुत ही भयानक था। उसका बाद आत हा शगर खड़े हो जात हैं। वैदिकधर्म म रुष्य व ह्यमाओं का दौड़दौड़ा था। यह के निमित्त अतिशय क्रमनि मन पणु तनय व घाट उताव जाते थ। व होन पणु रमान विन विनास पर कोई माई का लान उनही पुकार पर बान न होता था। बनार गराव पणुमा व रक्त स दह का योग लपपव हाजना थी। बह क्वचमे का बात है कि उन समय व हिन्दू इन पणुमाओं स दया देस्ताओं का प्रयत्न हाता मानत थ। इन सब पाप स वृष्टि होव उग था। मयत्र हाहाकार मच गण था। एस समय में बिना नदान् पुरव की आपदवकता

अच्छ अच्छ वाय पढ़ा करत थे । उस समय उनकी बरा-
बरी का कोई विद्वान नहीं था । कहावत भी है पुनः क
पान पाने में ही जीवन लगत है । इस प्रकार पढ़त २
भगवान् योग्य अवस्था में आये । इस समय उनकी शरीर
बिनाकुल नाराज और स्वच्छ था । स्नायुबंधन कम हट ग
जिस तरह का घन हो । निरस्थित था कथं गनतन के
कथा के जैसे ममल थे । कलाई मचकून पुष्ट और सुन्दर
थीं । भुजाएँ बड़ा के समान पुष्ट थी । नाता मान का मित्रा
के समान अंतरत समतल और चादा था । शरीर पमा
भरा हुआ था कि गच्छेइहा तक दिखाई न देता था ।
जाँचे हाथी की सूई की तरह पुष्ट था । आग्य यह है कि महा
श्वर स्वामी की शरीर-व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी । इस
प्रकार भगवान् महेश्वर के ज्ञान और योग्यता का धाड़ा-
सा बर्णन है । इसका बाद का अर्थवर्णन है भगवान् का महत्ता
की प्रशंसा करना है । जो ना के बाल्यकाल में ही विषय से रहते
थे किन्तु अद्वैत का गुरु । मैं रहकर भगवान् के हृदय में प-
गम्य की तरह रहता । इतना साक्षात्— श्रुति में सुखा नहीं
बना सकता । मित्र लोग हमें सुखा नहीं बना सकते । मर्यादा
हमें सुखी नहीं बना सकती । और असाध्यता भी हम सुखा
नहीं बना सकती । यद्यपि ये सब अपने समार के माहा अर्थ का
मुख्य तत्त्व है । मान्य होता है पान्तु के वस्तुविक मुख नहीं द
सकती । प्रत्येक प्राणी का सुखी बनने के नियम अपने पर
महा होता है । हमारे बाल्यकाल में मकर अपनी आत्मा का
ही स्वाध्याय करति । उसे परिचित बनाना करति । आत्मा के काम
बाधकार मरुमाना आदि करने गुरु है । इनमें मरुमाना मरुत-

नित्य कर सकत है। पालन में बर्तव्य बजाने समय शत्रु और मित्र का भाव न हाना चाहिए। बर्तव्य-पालन में शत्रु मित्र की भद्रवृत्ति एवं बुरा बाधा है। इस बाधा का हान हुए हम आदम बर्तव्यपरायण नहीं हो सकते। जैसे सूर्य अन्ध और धुर शानों तरह के आदमियों का समा मना से प्रकाश पहुँचाना है। जैसे ही कृतध्वनिष्ठ मनुष्य शत्रु मित्र का विचार न करके प्राणीमात्र की भलाई के लिए अपना जीवन अर्पण कर देता है। ऐसा करने वाले प्राणी महापुरुष जगत् में सबके सम्माननीय होते हैं।

पाठ १४

स्वरागरज्ञा

(२)

(संवाद)

अज्ञान एक साधारण राग समझा जाता है परन्तु अधिक विचार में मान्य होता है कि अज्ञान ही सब रागों का बान है। यह बात न समझने ही के कारण आजकल हर २ अज्ञान राग के रागी पाये जाते हैं। प्रथम तो अज्ञान होने का मोहा हो न जाना चाहिए यदि अज्ञान-घषाना से कभी हा भी जाय तो शीघ्र चिकित्सा कराना चाहिए। यदि चिकित्सा करने में ढोल हा जाय तो यह बड़ा प्रयत्न कर धारण कर लेता है, और अन्यान्य रागों का उत्पत्ति का कारण होता है।

है । औषधि भी पसी घेसी नहीं । तभी तब कि रागी का जम भर पोशा न झाड़ । कम अज्ञान ना दूर रहा अतीसार और सग्रहणो राग हा जान म जम भर हुन्नी हाना पड़ता है । इसलिये राग का परीक्षा या निश्चिन्ता करान समय बेध को परीक्षा कर जाना भी आवश्यक है ।

पाठ १५

प्रतिक्रमण

सस्तागो जीव अवन कायो म रितने हो साधधान रहै तथापि उन्हें कुछ न कुछ दाप लग हा जाना है । गृहस्थता दाग मे सर्वथा रहित हा हा नहीं सकत । क्योंकि सामागिक काय जिना आरम्भ परिग्रह क ना हान और जग आरम्भ परिग्रह है वहा पाप भी अघाय लगता है । चलन फिरन म भाषन म सपारा रसन म और जीवन निषाद क किसी भी आकादक कार्य म सदा दाप हा दाप लगा कर्न है । नापय घर है कि साधारण गृहस्थ-जीवन मानसिक वाचनिक और कायिक दाग का घर है । गृहस्थ-जीवन को उन्नतना में उन्नत हा हुआ गृहस्थ महाश्रनों का पालन नहीं कर सकता । इसलिये संन भगवान् महाश्रन गृहस्थियों को कमजारी समझकर उन्हें एकदाश्रन पालन का उपदा दिया है । किन्तु कई कारणों मे उन श्रन में भी कमोर भूल हा जायो है । कम उस भूल - सगाधन क लिए प्रतिक्रमण करना आवश्यक है ।

पाद लौटने को अघान् प्रमादना शुभ याग मे गिरकर अशुभ याग का प्रान्त हान के बाद फिर शुभ योग में वापिस आनाने का प्रतिक्रमण कहने है । अथवा अशुभ याग का टाकर उत्तरोत्तर शुभ याग मे धतना भा प्रतिक्रमण कहलाना है । पहले तोषकर

पाठ १६

व्यापार

(१)

प्राचीन काज में प्रत्येक वर्ण का एक २ निश्चित वर्तमान था। ब्राह्मण पत्र पाठन करण क्षत्रिय प्रथा का रक्षा रत वैश्य व्यापार करने और शूद्र मजदूरी करत थे। उस समय कार्यनिहाज के मियाय कमाएर दूसर का मुक्ति का कोई नुदा अपना सकता था। किन्तु अब नमाना जलट गया है। इस कारण उल्लिखित धुनिया का विभाग या का यों नग गदा है। आजकल ब्राह्मण क्षत्रिय का क्षत्रिय ब्राह्मण का वैश्य ब्राह्मण क्षत्रिया का ब्राह्मण क्षत्रिय त्यों का और शूद्र भी दूसर सर यनों के कम धेराक प्रक करते हैं। किन्तु इस समय में भी वैश्या का मुख्य काम प्रायः व्यापार ही है। यद्यपि प्राचीन कालान वैश्या का जितना व्यापार अब वैश्या के हाथ में नहा है किन्तु भी आजकल के व्यापार का अधिकांश आनकन भी वैश्या ही के हाथ में है। व्यापार में जितन बाना का अवश्यकता पडती है उनमें से जितनाक बाप इस पाठ में बतगार जातो है वह यह है— (१) वायगीनता (२) गुण अध्ययसाय (विचार) (३) अग्रमाद (४) उत्तम पुरुषा से व्यापार-व्यवहार (५) मचाई (६) अवचकता (७) मेत्री (८) द्रव्य क्षेत्र काज भाव का ज्ञान।

१. वायगीनता— समनदगा के बिना व्यापार हो ही नहीं सकता। जो बहुमूल्य बाना वस्तु में अप्र मुल्य का वस्तु मिला

मतिप 'गंगा'-संसार जाने न पछा अदमी को परस कर
नेन चाहिद।

१ सगा—हो व्यापार में गम आरम्भ करना है। निम्न व्यापार
हो मगा का सिक्का उम आता है उम अनापान हा मफलता
मिलता है। एक कथा प्रसिद्ध है कि—हिस्सा उगद काटके या
याग एक नेट मचाइ से व्यापार करत ग। एक बार एक ग्राहक
दुकान पर आया और काट का एक घान ले गया। दुकान पर
मुनाम था उमन १०, रुपय का उगद १० रुपय ले लिये। सठ
ता उध दुकान पर आये ता मुनाम न ताराफ बगर कर अपना
चतुगाइ को घान मुनाई। उम अनाप था मन्त्री गुन होगे, पर
उमका अनाप पर पानी फिर गया। उनका प्रमश हाता दूर रहा,
उज्जयिनी पु। अन्त में गरीबदार का बुलयाकर उमक क्षमधा-
गम किया। हम उगदता म सन्ना का इतना अधिक ख्यानि देन
गई कि उनका काग्यार चमक ग्य।

२ अयउरता—उगाइ न कर्म का कहत है। उगिया का भा
का विधाम नर्न करना। यदि वह डीक मूय बताव, ता भाला
ग मूट हो समझत है। अनाप व्यापार में अयउरता की भी
उमान है।

३ मैवा—या ता अनुपचारत में प्रत्येक समय मैवा का
आरम्भ करना है किन्तु व्यापार म विप। जा सब में मैज
मिताव नही रखता उमे व्यापार में उतना मफलता नही मिलती
अितनी मन्त्रात का।

४ उय छत्र काव भाव क पान—यिना को व्यापार नर्न
कर सकता। यदि क ता लाभ का उगद हाति उगयता।

मन्द का धन सुन राजा का बड़ा अचम्भा हुआ। उसने राजसभा में जाकर पण्डितों से मन्द के धन का उत्तर पूछा मनु उसका उत्तर जिसका सन्मम मन छाया। उसी समय कविशास्त्रार्थ नामक मुनिगण पधार। उन्होंने कहा—

‘आदिन कैन’ वही आ निनिदिन धर्मकर्म में रत रहता है।
‘निमने सगुण’ और धर्म नहीं वह करत दुस्वहा सहता है॥१॥
‘नरिन कैन’ वही इस जिसके जीवन में मञ्जन आने है।
‘वा एर का उदहार न करत’ व जीवन-फल में रत है॥२॥
‘आदिन कैन’ वही है अजवर’ आने हुए मञ्जन करत है।
‘सहा सरल सगुण-राय’ पण्डित में आ जाने है॥३॥

कविशास्त्रार्थ का उत्तर सुन राजा ने उनसे कहा—महाराज! क्या जानवों का भी धर्म कर्म जान हो ऐसा होता है? शास्त्रार्थ बाल-राजा। उत्तर अचम्भा और दुश्मनों मनुष्य में मा जाता उच है। एक कहानी सुनिए—

एक विद्वान् जिसका नाम था रामानन्ददास। रामानन्द में उद्भूत कहा—‘आ विद्वान् न हा नार्व न हा दानो न हा अन्धान् न हा धर्मना और गुण न हा वह मनुष्य के आचार का मूल हा है। वह दृष्टिही का कृपा बालों करत है’। उम्हा दान एक मूल का न दान’। उम्हने कहा—महाराज! विद्वान् मनुष्य में हमारे दुष्टता करत हमारा धर्म करत है। वह हमारा बरतना नहीं करत। हम जान जिस का कुछ नहीं बिम्बर और निष्ठा में आता एह जान है। हमने मनुष्य हमारे अन्ध हमारे है न हम उम्हा का मनुष्य अन्धता का किसी अन्ध अन्ध नहीं करत। एक सगुण दान दान विधवा और अन्ध मूलों से दान दानों दानों

गया—'परिदुतता' नाम एक दूसरे में सुख के साथ और निगुण आत्मा का गया कहा करते हैं। इसमें उस आत्मा का कुछ शिथिलता नहीं है। यदि वह समझकर ही भा उठता प्रसन्न होता। क्योंकि गन्ध आति में अनन्त आत्मा २ गुण पाये जाते हैं। पर हम इस उचित नहीं समझते। हम जान इतने समझा जाते हैं कि तब और घरमा का परमात्मा नहीं करते। यद्यपि नाम अन्तर्गत पर लिए हुए भाव का उठाने में कारण हो जाते हैं परन्तु हम अपने स्वामी का इच्छानुसार भाव उठाते म कभी आनायाता नहीं करते। और हमारा भट्ठा या सब हो जाता है। इसलिए गुणों के नामों का धरा धरा नहीं कर सक्ता।

परिदुतता—निश्चय यह विद्या आत्मा का उपाय विद्या जानकर म भा नष्ट हो जायगा। अतः हम एक मनुष्य का अन्तर्गत मनुष्यता बताने करने के लिए सन्तुष्ट अन्तर्गत आनन्द करना चाहिये।

पाठ १८

भगवान् मन्मथ

(२)

भगवान् न मन्मथ होने के पश्चात् करनमान का आसि होने नष्ट लगभग बारह वर्ष का मौन धारण किया था। उस समय में कठिन से कठिन तपस्या करते थे। क्योंकि उन के चार मदाना में एक ही जगत् इस लिए रहने थे कि धर्म के कारण अगमिन् काम रहे चन्तु पैदा होना है। इस समय भगवान्

[illegible]

गतर होकर दूसर की जरूरत ग्रहण कैसे कर सकते हैं ? इसी लिए महावीर प्रभु ने इन्द्र की प्रार्थना का दुहरा दिया और हम लोगों को यह सिखाया कि दुखों में मत डरा । आपत्ति आने पर धीरता से उसका सामना करा । दूसरों के आगे हाथ फैलाकर दया की प्रार्थना करने वालों को दुख दूर नहीं हासकने । जानना दिवाकर दया का प्रार्थना करना स्वयं एक दुख है । और जैसे काचड़ से कीचड़ साफ नहीं होती उसे ही दुख से दुख का नाश नहीं होसकता । प्यार बालका । प्रभु का यह गिरा बरत करने योग्य है । यह बात प्रभु धार्य है जिन्होंने मनुष्य जाति का आचार दिया पर इन्द्र का सेवा आचार न की ।

इसके पश्चात् इन्द्र अपने मार्ग चला गया । और प्रभु तपस्या करने हुए यत्र तत्र विहार करने लग । एक दिन प्रभु विहार करने करने अवनाचिका नगरी की ओर आगे लग । रास्ते में एक मनुष्य ने कहा—“हे प्रभु” यह मार्ग साधा ना पड़ता है परन्तु इसमें एक दृष्टिदिष्ट सप गढ़ता है । उसका भय के मार बड़ा किमी की पैठ भी नहा है । इसलिये दया करके दूसर मार्ग से पधारिये” । उसकी बात सुनकर भगवान् ने अपने दि गहान से उस सर्प का पहिचाना । उन्हें मानुष हागया कि यह सग भय है । यह जैसा भयकर मानुष हाता है शम्भु में उतना भयकर नहीं है । वह अपनी गति का शुरुवात कर रहा है । यह साचकर उहो-न उस पुण्य के कहने का परादा न कर उसी मार्ग से जान का डाना । भगवान् वहीं पदुत्र प्यान धरकर खड़े हो रहे । इनने में अरहन्तों के नामक साथ अपने बिज से बाहर निकला और प्रभु

और हिमालय की नारि झडाल बैठे रह। उनके बिनाल चहरे
मे बिषाद की एक भी रखा व्यक्त न हु। मानों उन्हें खबर
नै न पकी हा।

एक समय की बात है कि भगवान् विहार करने हुए 'पेदागा'
गाव के समाज किंसा अनाथ बालु पर दृष्टि उमाकर समाधि मे
नम्र हागये। उस समय एत न उन क चारित्र की मुख प्रशंसा की।
यह प्रशंसा सुनकर एक सगम नामक दूज बाधित हुआ।
उसने निश्चय किया कि महावीर का तपस्या से ब्रह्म करके एत
का नीचा दिखाउगा। इस कल्पित भावना से प्रेरित होकर
वह भगवान् के पास आया। उन्हें तपस्या से व्युत् करने
क लिये उसने छह महान तक पमे घागनिघार उपसग उपस्थित
किय कि जिहें पढ़ने मात्र म ग्लि बपायमान हान लगना
है। उसने सब मे पहल धूलि का घरा का। मामूला घरा नहा
एसा भयानक कि भगवान् का सारा शरीर उससे टंक गया यहा
तक कि साँस लेन म भी बाधा हान लगी। अब भगवान् इससे
न डिगे ता उन्हें डाम और मन्त्रुग म इस्तेयाया। पद्यान्
सर्प बिन्दू नेवज आदि भयकर विभिन्न जानवरों का उत्पन्न कर
उन मे कष्ट दिलाया परन्तु दाघतपस्वा महावीर न इन सब
सृष्टा का बुद्ध भा न गिना। यहा नहीं शत्रु का शत्रु भी नहा
समझा। परन्तु सगम इतन मे मन्त्रुग न हुआ कब की बार ता
उमन अति भयकर कष्ट दिया। अद्यान् उसने बहुत बननदार
छोट का गाला बड़े डार मे प्रभु पर फेंका। कहते हैं उसम प्रभु
घुगनों तह धरती म घम गय परन्तु ध्यानसे न गिर। प्रभु मे
धैर्य था उन्हें दह म ममता न थी और अमर आत्मा का अन्तु
भव करन थ फिर बड़ेमे दिग सकन थे। प्रभु की यह विषय

अब हम बाल का विचार करें कि बालबाल बनने का स्वाधान उपाय क्या है 'यदि का' मुझ से यह प्रश्न पूछेगा मैं यह उत्तर दूँ कि व्यायाम ही एक ऐसा उपाय है जिससे हर एक आदमी बन-गला हो सकता है। और व्यायाम करने हाथ की बात है। इसलिए यह स्वाधीन उपाय है। व्यायाम करने से नगर नगर मजबूत और सुदृढ़ होता है। व्यायाम से नगर के सम्पूर्ण अवयवों में एक प्रवाहित हान से अवयवों में स्फूर्ति उत्पन्न होती तथा दृढ़ता आता है। व्यायाम करने वाला पुरुष अल्पी बूढ़ा प्रवात नहीं होता और उमराव बुढ़ापे में भी व्यायाम पुरापाय करने की गति बना रहता है। इसके विपरीत कभी व्यायाम न करने वाले मुर्ख के जिसे काय में उत्साह नष्ट नष्ट आता। वह सदा पराया मुग ताकता और भौंटा करता है। अनेक गंगा का स्थान बन जाता और सुख बना धस्तु है। हम का बिजुल भी नहीं सम्भल सकता। अनेक एक बालक का व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

व्यायाम के अनेक प्रकार हैं। उनमें मस्तिष्क से काम लेने वालों का धूमना सबसे अधिक लाभप्रद है। इसके सिवाय डाइ पनना भी लाभदायक है। धूमने से स्वरूप धातु प्राप्त होती और ऊपर के लिये बहुत लाभ होता और हाजमा सुधरता है। डाइ पनने में पाचनशक्ति तीव्र होता है। मुट्ठर घुमाना भी एक प्रकार का व्यायाम है। इससे मुट्ठाओं में और सीने में रचना आता है। किन्तु यह ध्यान में रखना कि अधिक व्यायाम से लाभ के बन्धन रहित होता है। अब जब मुँह सूखने लगे मुख से अल्पी

पाठ २०

ध्यापार

(२)

ध्यापार के लिये जिन आवश्यक वस्तुओं का उत्पन्न पहन कर गंगा है उक्त सिद्धा और भी बहुत वस्तुएँ हैं जिनसे ध्यापारी का जानना चाहिए । पहन लिख हुए गुणों का यदि कोई ध्यापारी प्रामाण्य कर ले किन्तु उसके पास पूजा न हो तो ध्यापार नहीं किया जा सकता । पूर्ण ध्यापार का प्रारंभ है । खगदना ध्यापार का पहला काम है और दूसरी बिना काय कर मते देगा । नारायण यहाँ है कि जिसके पास प्रज्ञा हा चाह पद उपार की हा घर की हा, या हिम्मत की हा वही ध्यापार में हाथ डाले । बिना पर्याप्त पूजा ध्यापार करना मूल्य ही नहीं, दूसरों का फँसाने का प्रयत्न है । कहावत है— 'अच्छी पूजा ससमो साध' अर्थात् अच्छी पूजा में कोई सकलता नहीं पा सकता । ध्यापार करने वालों का पूजा का ध्यान रखना पहली बात है ।

* पूजा की जितनी आवश्यकता है उसमें अधिक साध की है । खगद हुर मान की कामन खुदा देने की प्रवृत्ति का साध कहन है । बिना साध के प्रयत्न ना ध्यापार शुरू हा नही किया जा सकता और शुरू कर भा दिया जाय ता बहुत जितने मर खन नहीं सकता । जगत् में जितने ध्यापार हात है उन सब का आधार साध है । साध बड़ी मरत पूजा है । ध्यापार में उा काम साध वालों में हो सकता

धाड़ा हा ना भी प्रतिष्ठा बना रहनी है । जो व्यापारी इन धानों पर ध्यान रखकर व्यापार करेंगे उन्हें अवश्य सफलता प्राप्त होगी ।

पाठ २१

अपनी भूल स्वीकार करना

मनुष्य जब तक सर्वज्ञ नहीं बन जाता तब तक वह भूल का पात्र है । कोई भी पुरुष चाहे वह कैसा ही विद्या विचारक क्यों न हो वह प्रतिष्ठा नहीं कर सकता कि मुझ में भूल नहीं हुई मानी जाती या नहीं होगी । हम जिस बात का अच्छा और बहुत अच्छा समझते हैं कदाचित् वह ठीक न हो क्योंकि हमारा ज्ञान-बुद्धि और समझ-बुद्धि परिमित है भूल नहीं है । अतः यह भूल मानना महत्त्व है । जब भूल हो जाए तो उसे मान्य मानना ही स्वीकार कर लेना चाहिये । जो ऐसा करत है वह सभ्य समाज में उच्च आसन पाते हैं, और वह उन्नत भी हो सकता है क्योंकि वह अपनी अल्प-ज्ञानि का ज्ञान है और दृढ़ करने का कुशल से वह ज्ञान विरमृत नहीं बना दिया है । इसलिये उनका 'भूल-स्वीकार' गुण का सम्मान करना चाहिये है । जिसका ज्ञान पर यह गुण शासन करता है वह गुणी ही सकता है । इसके विरुद्ध जो अपने अभिमान के कारण मन में जानता हुआ भी भूल स्वीकार नहीं करता मनुष्य पृथ्वी पर उच्च-वर्णन करता है । उस पर लोग का ध्यान नहीं रहता । उसे अपनी भूल

। तुमने उन स्वीकार कहा किया तो उन दूसरों के मुँहों
 में क्या बिहार पैदा होगे जिससे वह वे तुम्हें पूजा की दृष्टि
 में लेंगे । इसी से बहुत लोग सर्वत्र पूजास्पद होने लग गये
 । इसका विषय यह कि तुम धन्यवाद के साथ दूसरों के
 लिये दानों हुए भूत का स्वीकार कर लो तो वह तुम्हारा
 दुश्मन बन जाएगा ।

वाक्याँ दृष्टि तुम्हें दूसरा के सामने अत्यन्त भयानक
 न बनना है और न वे का अपमानन का अभ्यास होना
 जो दासता की भूत शक्ति है न ही यदि हा भी जाय क्या
 । दूसरा शक्ति का धर्म होता है तो उसे स्वीकार कर लो ।
 दासता स्वीकार कि हमारा होता है जो सत्य है ।
 दासता स्वीकार कि जो हमारा है हमारे मुख से
 निकलता है वही सत्य है ।

हा वह सत्य सत्य है । उस समय न ही शक्तियों है
 वे दूसरों से न ही । सत्य है वही हमारा भूत तो वह
 है वह दूसरों का भूत मान्य पड़ने ला । इसी कारण
 । दूसरे दास वह मान्य स्वीकार हुए भी दूसरों की शक्ति
 न मान्यगी न ही । वह वही मान्यगी दास पर फिर
 बेकार बाल और दूसरों का मान्य हो दिखने लगे भूत
 ला है । सत्य करनी इसी सत्य हो है जो तुम्हें वह
 मान्य ला । यदि सत्य कि न तुम्हें सत्य के मान्यगी
 मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य
 मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य

। निराग होते ही आत्मा का ज्यादा नोद आती है
समे उसके बल की कमी पूरी हो जाती है ।

सने का सब से अच्छा समय १० बज म १ बज
क रात का है । सूर्योदय तक सने से बीमारी होती है ।
सी बारस बड़ावन भी प्रमिद है कि- 'सुबह साना और
हीवन से हाथ घाना है' जा लाग नियन समय पर साते
और नियन समय पर जाग जाते है उनका ज़रार सदा
वस्थ रहना तथा बुद्धि बढ़नी है । परन्तु जा लाग दिन में
ग अनियन समय पर सने जागते है व आलसी हो जाने
तथा उनकी बुद्धि का वृद्धि नहीं होता । हा भागन करने के
अबान् घेदा आराम करना लाभदायक होता है । गरमी क
नेलो म रातहर का धाँकी निद्रा से मन स चित्त अनुत्थित
ताता है ।

दिन भर काम करने रहने म रात म अच्छा नोद आता
है । किन्तु सान में एहन अधिक भाजन करने म बड़ा-
सा का जाता है कामान्द का अधिक परिधम आता प-
वना तथा बाहियन स्वप्न आता करने है । इसलिद रात में
भाजन कदापि न करना चाहिये । रात में भाजन करने से
और भी जनक हानिदा होता है । भूमि पर सने की च-
पला पनेल, लाट, मूली पसिया आदि पर माना अच्छा है
क्योंकि जमीन पर सने में सार विषय आदि के बगने
का डर रहता है । मोड़दार घरलो पर सने में गहर में
की प्रहार के रोग उत्पन्न हो जाते है ।

जोदने बिदने की बजे सन स्वच्छ रहना चाहिये ।
मेनी रखने से उनका देन चरे के जिने हुए इतोर

व्यस म समभाज है । दूसरा क ज्ञान करने विचार प्रगट करने का उह विचार वाच्य रहमान का आर क्कन म म्पाकार करान का मनन अधिक ग्राह्य और मयस उत्तम उपाय द्वा है । आ क्कन अधिकार क उमाद् म डमस हा क अनुचित द्वाय ज्ञान म्पा वात मान का प्रयत्न करना है यद निधय उमन हा है । म्पा करने म आ द्वायतिह हाव है य ता क्कमसमवत् करक म्पा क्कन विचार नहा पनय और आ विधित हात है य उस म्पाय उर क भार न्वाय मान ज्ञान है पर द्वाय म्पा मुन हात हा उन विचार का निराकरण न्मत है । इसविष क्कन विचार म सम्मिलित करने क विषयमा का उप याग न करना शक्ति तथा अनुचित द्वाय न डारता नातिह । किन्तु ज्ञान म क्कन विचार दूसरो क सामन म्पाय और उर समभाज का यन करना नातिह । यदि व न मान ता नस द्वाय न करना नातिह ।

जस धार्मिक विषया म मनभद हाता है उसी तरह सा माजिक सुधार क विषया म मनभद हाता है । अगर तुम्हा विचार विस्तार दूसर स नहा मिलन ना उनक विषय म्पा विचार मन करा । जस तुम्हा मन म सुधार का जगन है तसे दूसरा क मन म ना । विचार करा कि यदि उनक चित्त म सुधार का द्वाय भयता न हाता ता व व्यथ हा क्या तुम्हा विषय करम साधारण मनुष्या का तरह का ना प्रमाण म हा ज्ञान क्या व्यतित न करत ? पर उनका द्वाय मा समाज क अध्यापन का चाट म न्वा हा रहा है । इसविष उनका नियम पर सम्द न क्कग । यदि वास्तव म्पा

नेला से मुझे मनावादिन सगलता मिलगी । तुम दग
समाज आदिवा उधार-कर सवागे और सब के प्यार हा स
कागे । सदा विचार करते रहा कि "ह भगवान् उज्जग
आचरण करने वाले पर यदि मेम न कर सकू तो उस पर कम से
कम मध्यमभाव धारण करे ।

पाठ २४

भगवान् महावीर

(३)

सामा जेस अग्रि में तपने से चमकते लगता है उसी
रह भगवान् महावीर का आमा बारह बर्ष की कटिन तपस्या
त अग्रि में तपने से बेवज्रान द्वारा चमकन लगी । इसी
प्रकार उन्हें अम्बुह नामक भाम में श्रुतवाजिका—नदी के तार
पर जालिबुध के नीचे—समाप्त मुदि दगमी के दिन बेवज्रान
त प्राप्ति हा गई । जब समाार में कोई भा पसी वस्तु न था
जिसे भगवान् न जानते हा । आ लोग दूसरों की आल
का कर पाप कम करने है और समझने है कि हमार
दुष्कर्म का किमी का कान। कान भा स्वर न पकगा वे तारे
हुम्पू है । यदि कोई साधारण मनुष्य न भा जान पावे पर
बेवज्रानों तो जानत हा है । उनस बुद्ध दिवा नहा रहता ।
इस कारण काह बुरा काम न करना चाहिए ।

जब तीर्थहरी का बेवज्रान उत्पन्न होता है तब स्वर्ग
स इन्द्र आदि समस्तदेवता की रचना करता है । समस्तदेवता
इस मना को बहुत है जिसमें भगवान् धर्म का उपदग देने
है । जब ब्रह्म महावीर को बेवज्रान ने आकर

मेला से नुर्खे मनावाहित सकलता मिलेगा । तुम दश
सनाइ आदिवा उदार-वर सजोगे और सब के प्यारे हा स
होगे । सदा विचार करते रहो कि "हे भगवान्" उल्ला
आचरण करने वाले पर यदि क्रोध न कर सकू तो उस पर कम से
कम मध्यमनाय धारण कर ।

पाठ २८

भगवान् महावीर

(३)

सना जेसे अग्नि में तपने से चमकने लगना है उसी
तक भगवान् महावीर का आमा बारह वर्ष की कठिन तपस्या
का अग्नि में तपने से बेचलवान द्वारा चमकने लगी । इसी
समय उन्हें उम्बुक नामक ग्राम में शत्रुबालिका—नदी के तार
पर गालिवृक्ष के नीचे—धम्माम् सुदि दगामी के दिन बेचलवान
का आमा हा गा । अब समार में कोई भी पसी बस्तु न थी
जिसे भगवान् न जानने हा । आ लोग दूसरों की आमा
बचा कर पाप कम करते हैं और समझने हैं कि हमारा
दुष्कर्म का किमी को जानों जान भा खबर न पकगी, बलि
हुम्पू है । यदि कोई साधारण मनुष्य न भा आन दाद का
बेचलवानो नो जानने हा है । उनसे कुछ दिया गल गल ।
इन कारण को हुए काम न करना चाहिए ।

अब नैर्पक्षों को बेचलवान उपाय होना है जो आमा
से इन कारण सपसराय की रचना करना है । आमा
उस रचना को करने हैं जिसे जलाना है का जलाना देने
है । अब प्रभु महावीर को बेचलवान हुए गल गल ।

जो हम लोग भी उमा लक्ष्मी का पूजा करने हैं। परन्तु गच्छत क्षण क्षणों का न समझकर धन हीनता से लक्ष्मी समझकर और उमा का पूजा करने हैं। बहुत बानक लाख लाख हैं। इस सिखाएनि के लाल नहीं होता। हमों ने ना बड़ी ने दुष्टनाएँ हा जाता है। प्राण प्राण के या तो राजको के जल जान का खर मुना जानी, या महान काम में काम लग जाने का। धार्मिक प्रसंग पर प्रसादनक कृप्य करना कदापि उचित नहीं हा मन्त्रा। मन्त्रि उस समय हमें धर्म का आगधना करना चाहिये। सी राशि में आगौतम गन्धर्व का कथनज्ञान का प्रानि हुई थी। मन्त्रि उनही स्मृति के लिये व्यापार आग पहलपहल 'आगयगायनम' (गद्य कव्यामा गौतम का नमस्कार हा) लिखने। परन्तु 'आगौतमगायनम' पसा लिखना ओह भी अच्छा है।

बानका परम पूज्य परमा मा मन्धार का नमस्कार करा। जन्मान हमें काम-कल्याण का माग सुभाषा। उनके जीवन के जो निधारे मिलें उन पर बला और दूसरी का बलाभा।



गुल म बर्तन मिला ला उर म बाल माल ।

मन मला यह हुए है सुख मगनि म भान ॥१॥

रमा (समाप्त) मग, समन (मन) कुो म न

रम रम मग गुल मल

रम - मम मग - सुख म

रम - मग मग - मग

पाठ २६

शान्ति-पत्र

कहा मग मग भी मग है

मग न मग मग मग मग है ?

मग मग मग है

मग मग मग और मग है ॥१॥

मग मग मग मग है

मग मग मग मग है ।

मग मग मग मग है

मग मग मग मग है ॥ २ ॥

मग मग मग मग है,

मग मग मग मग है ।

मग मग मग मग है,

मग मग मग मग है ॥३॥

अतिथि वही जब आ जाता है
 पद अतिथि पदों पाता ॥
 रह गया जाता है घर
 वही मर गया हा जग ॥१०॥
 जगता बड़ा ज्ञान का उपाति
 गिरा का यदि बसा न होता ।
 ता य ग्राम स्वर्ग बन जात
 पूर्ण ज्ञानि-रस म मन जान ॥११॥

—मेरु जगत्सु गुप्त

अक्षिप्त-मुद्रा ॥ २ विद्वान् गायक सुगो के निशान बाये
 नन्दन विन इ कावन मन जाना न्नि हात्रा

पाठ २७

नीतिसम्राट

पदज ललित क हाथ गुप्त फर अरमा काज ।
 जान मन का हा न दुख, जिहो न जग में छात्र ॥२८॥
 सुनि क सबरी बात का पहल देहा हत ।
 फिर उत्तर मुख से कहा या विधि राखी धन ॥ ४
 परमिदा कर जा मुहें, न बड़ा पूर ।
 मत मूर्खों या पै बहुर मुहें बहग कर ॥३॥
 जा आपस में बैर करि, मित्रें और क साथ ।
 व भगन है बहुत दुख, पद बैरी क हाथ ॥३॥

पाठ २८

परापकार

गतिता का दूर का उपकार मे आ गति है
 पूर्य है वह क्योंकि अरुण कम ही कौतान है
 दिव्य कुन में जन्म ही से नाम बुद्ध दाता नहीं
 क्या मन्त्र है पून में लघु बाज है हाता ॥१॥
 अन्न भर उपकार करना मानिया का उम है
 कम से पात्र न दटना मानिया का मर्म है ।
 मय अब तक है अग्नि तम का पना जगता नहीं
 स्वर-समारा सामन फग मय त्रि सकता बड़ा ॥२॥
 अद क उपकार मे हा मान पान है सभा
 दध पागपाय मे हाता नहीं बुद्ध भा कभा ।
 धम्भ भूप आ कहीं स्वर का तुल्य क तुल्य हा
 ता इसाम का उभय का एक हा सा मूल्य हा ॥३॥
 आ पराप काम जाना धन्य है जग में बड़ा
 द्रव्य ही का आकर का मुपय पाता नहीं ।
 पाम जिसक रजराणि बनल और अरु है
 का कमी वह मुरधुना क सम दुष्मा सन्निपा है ॥४॥
 आभा नरदह का कम एक पर-उपकार है
 हार का भूपय कहे उस बुद्धि का धिक्कार है ।
 मय को जगार बाध भ्यान फिर भा जगान है
 पूजि-धुमर मा करी पाता मदा सम्मान है ॥ ५ ॥

देना-ममता हाट जा पगला के उपकार में ,
 है लगा, यह क्या न दुबे दुख पारवार में ।
 इंदु नभ का छाड़ जा रहता न हर के माथ में
 मम्म म कथा निम हाता यह पराय हाथ में ॥२॥

—रामचरित उपाख्यान ।

बीबीन- कुलीनता को- कीद।

नाममैय्य आवा, तज हवा बराटाप- पटना के का आम्बर
 (काय आम्बर)

रा गरा मम्भ तुम - मोहा

रमय लाने मुरधनी- भगा नरी

मल्लिश समान वान-कुना

गुलि मुरा पुत्रमग कंग हाथी

कोट्टावगी वन जेतु- गला वम्ममें होन वाले प्रसजीव

कु- अनावगया

मग मय

उर ह व

पगवा- मगु

इंदु- चन्द्रमा

हर- मगव



कृपेन विरहाय परितेन घर हाय
 वामनेन दास हाय हिन दुरजन ते ॥
 सिधनेन सुरग हाय व्याज स्याज अग हाय
 विरनेन पियूष हाय माला अहिफल ते ।
 विगमनेन सम हाय सकट न व्यापि काय
 धने शुन होष, सत्यशर्मा क दमन ॥३॥

गुरु

(रिंगीनिका ह)

मिथ्यात वजन सिद्धात साधक मुक्तिमार्ग जानिय ।
 करनी करनी सुगति दुगति पुण्य पाप बखानिये ॥
 समान सागरतरेनतारेन गुरु जहान चिगानिय ।
 अग माहि शुभम कह दनगति और काउ न देखिय ॥४॥
 कविशर बनारसीशमश

मुज्जान- नैय

बाग- दूध वै

धारावा- बा उ

कुभने- अगस्त्य ऋषि

अगति दार- एक प्रकार का भूख कृष्ण

लकडा

क चक

निशित्त- चउदा

कथाप- सन्तुष्ट

गदद- दण्डो

केलभैत(मवन)- नाकशुभा

विदध- फल

वातिवि- सनुद, मा

विश- गडदा, गडहा

माया खेल घननय दाह । लाभ-सलिलसाधक-दिननाह ॥२॥
 तुम गुनसागर अगम अगार । ग्यानजिहान न पहुँच पार ॥
 नट हा तट पर डालन साय । स्याम्य सिद्ध तहा हा हाय ॥३॥
 प्रभु तुम कर्ति-धल बहु धन । नन विना नग मटप चढा ॥
 और अद्व सुनस निह चहै । य अग्नेधर हो नमलहै ॥४॥
 अगनपाव घूम विन जान । कीन माह महाविष-धान ॥
 तुम मेधा विष नागन परा । पर मुनिनन मिटि निहचै करो ॥५॥
 जम-लता मिष्यामठ मूल । जामन मरन जग चिटि फूल ॥
 सा कय हायिन भगति-बुडार । क नही दुख-फल दातार ॥६॥
 कलयतरावर चित्राफल । काम पारना नौनिधि मेल ॥
 चिन्तामनि पारस पाषाण । पुण्य पण्य और महान ॥७॥
 प सब एक ननम सधाग । किंचित सुखगतार नियाग ॥
 त्रिमुधननाथ तुम्हारा मय । जनम जनम सुखदायक दय ॥८॥
 तुम जग धाधर तुम जगनाथ । असरनसरन विरद विख्यान ॥
 तुम जग जीवन कर रक्षाल । तुम दाना तुम परम न्यान ॥९॥
 तुम पुनोत तुम पुण्य पुरान । तुम समझमा तुम सधनान ॥
 तुम जिन नगपुण्य परमम । तुम प्रिया तुम रिपु माहम ॥१०॥
 तुम हा जगमरता नगवान । स्यामि स्वयम् तुम अमनान ॥
 तुम धिन तान काल तिहुँछाय । नहि नहि सरन आजका कोया ॥११॥
 नित कारण कहनानिधि नाथ । प्रभु स-मुख जारहम हाथ ॥
 अबलौनिक हाय निखान । नगनिधास दुई दुखदान ॥१२॥
 नर लौ तुम चरनाम्पुन दास । हम उर हाहु यही भरदास ॥
 और न कहु धाद्धा भगवान । यह दयान दापे घरदान ॥१३॥

पाठ ३१

गिरधर की कुण्टलियाँ

दौलत पाय न कीनिये सपने म अविमान ।
 चंचल जन दिन चारि कौं ठाउँ न रहत निदान ॥
 ठाउँ न रहत निदान नियत जग म यग लीनै ।
 माठ बजन मुनाय यिनय मय हा की कीन ॥
 कह गिरधर कविराय अर यह सय घट नौलन ।
 पाहुन निशिदिन चारि रहत सय ही के दौलत ॥१॥
 साई सय समार म मंगलस का प्यौहार ।
 जय लग पैसा गाँठ में तय लगि ताकौ यार ॥
 तय लगि ताकौ यार - सग हा सग डालै ।
 पसा रहा न पास यार मुख म नहीं बान ॥
 कह गिरधर कविराय जगत का पाहा लग्या ।
 करत बगरना प्रात यार हम विरला दखा ॥२॥
 मूटा मोटे धचन कहि अल उधार ले जाय ।
 लेत परम सुख ऊपने लेक दिया न जाय ॥
 लेक दिया न जाय ऊँच अट नीच बताये ।
 अग उधार का रानि भागते मारन धाये ॥
 कह गिरधर कविराय रहै अनि मन म रुठा ।
 बहुत दिना है जाय कहै तग कागद भूठा ॥३॥
 रम्मा मूनत हो कहा यार हा दिन हन ।
 तुम मे कत है गय अरु है है इहि मत ॥
 अरु है है इहि मत मूल जगुगाया दीने ।

हेन्‍ड्री-वाल-शिजा चाथा भाग

— १५५ —

भरोदाग जेठमस सेठिया

निर्देशन

वहें हमें वह सत्य हमें जानना चाहते हैं। नया सत्य और परिवर्तित सत्य ही निधान रहे है। उनका न हमारा प्रदान का ज्ञानांतर हमें जो उनका प्रदान किया है उसी में प्रेरित होकर इस सत्य का सत्यपत्र में हमने दिया दिव्यार्थ दिखाई है। प्रथम भाग का ही सत्य व निदान रहता है। प्रथम भाग का ही और उनका न भी उसे ज्ञानान में हमें दिखलाया ही फिर भी हमें जो-जो भूतना दे दिखाई है। उह हमने सत्यपत्र ही कर का प्रदान किया है।

सब से बड़ा मूल्यना की पूर्ति आ हम मरकर में ही गई है वह है पापों का संचित हान। एतल सस्कर में ही हमें यह बात समझनी दा पर बड़े बारों में इस बार हम जान दिया। का बाद विन न कर सके। यह बनझना कनधारा है कि बिदे से पापों का मन्त्र चितना बड़ आता है मन्त्र पाप विन चितन सार और सहजान्य हो जाता है।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विषयसूची

—१८३३—

(गद्यभाग)

१ भगवान् महादेव (१)		१
२-सर्वम कल्प राम	(२५५)	५
३-वामादि	१३-अनकप वाने	६
४-विदुः । अ ह धातिरव	१४-अनकप वाने	१२
५-आनकप वाने	१५-अनकप	१६
६-विदुः विदुः वाने	१६-अनकप	१८
७ भगवान् महादेव (२)		२०
८ गता और उमरा नहर	१७-अनकप वाने	२४
९-अनकप	१८-अनकप वाने	२
१०-अनकप	१९-अनकप वाने	३१
११-अनकप	(२५५)	३३
१२-अनकप	१३-अनकप वाने	३८
१३-अनकप का वैधे पर प्रभाव	१४-अनकप वाने	४१
१४-अनकप उवा वाने	१५-अनकप वाने	४३
१५-अनकप का नल	(२५५)	४५
१६-अनकप		४७
१७-अनकप	१८-अनकप वाने	४९
१८-अनकप		५३
१९-अनकप	२०-अनकप वाने	५५
२०-अनकप		५७



मन्त्रालय मन्त्रीय का उच्च गुण तब सर्वत्र हुआ ही था
 हीरकैय्य था । तब वह निमित्त मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वये पदु तब
 है था तबने उने था । वे तब मन्त्रिद्वय पदु ही था तब
 हीरकैय्य ही उने थी । तब तब पदु ही मन्त्रिद्वय
 ही मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय
 गुण ही मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय
 तब मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय
 मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय
 मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय
 मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय
 मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय मन्त्रिद्वय

धृता । मित्र लोग हमें मुसी नहीं बना सकते । सपलता हमें
भी नहीं बना सकती । यद्यपि ये सब धार्ज ममार क मोही
पैरों का मुख देने वाला मानव होती है । पान्तु ये वास्तविक
नहीं दे सकती । प्रदेह भाड़ी का मुख बनने क लिये
उने पैरों पर खड़ा होना चाहिए । दूसरों का सहारा न लेकर
अपनी छाया का ही खोजना चाहिए, उसे पथिज बनाना
है । छाया क वाम, दाय, लाम और मद माया आदि
नेत्र अनु है । इनमें समझी रचा करना हर एक मानव का परम
लक्ष्य है । यह विचार कर मगधान न शाहा सेन का निश्चय
होता । उन्होंने अपना निश्चय करने बड़े भारी बहिष्पन में
होता । पान्तु उसने अपना मन्वति न ही और कुछ दिन और
हमारी में रहने का आग्रह किया । मगधान को ममार क
वैश्य भोग यद्यपि काम साध एने इरादने प्रतीत होते थे
पान्तु वे करने बड़े भारी का आग्रह न टाक सक । उन्होंने उसे
से ही बच और बाट । पछात्त इन मगधान क साथ शाहा
सेनी हि ममार इन्द्राज क समान है । अंगद क मर पदाय
अनी के बुलबुल की गाई बान की बात में मर होने दिखनी
लेते हैं ।

उस समय हरी ने हर्ग में आकर शाहा बल्लभ मनाया
है । इन प्रकार अन्ध लक्ष्मी गरीर राजमा टाट के बहिष्प
होई और अन्धकार में प्रान्त हो रहा था, अब वह समय
आ गया है जो सब दुःख दूर करने का साधन है । एसा करने में
हमें जरा भी मोह न हुआ ।

शेजा सेने है । मगधान को मगधान मन्वति न टाक
गया । उसने दूसर के मन का बच अन्ध का सहारा ही न

देकर कहा 'क्या क साध रहे'। मगधन ने उत्तर दिया—
 'है'। अर्धरत्न कहा दूसरी वा कथन नहीं लिखा करन। व
 मगना हो मुझापी से सक्ती के सदुद्ध का पार करन दे "।

प्रश्न

- १—कथन कहानी का नाम क्या है तब इस की क्या इच्छा थी ?
- २—कथन कहानी का रीति कुछ, इसकी भाषा का क्या नाम था ?
- ३—कथन कहानी की रचना के कई प्रकार थे ?
- ४—कथन कहानी का 'कथन' नाम किसने रखा था ?

पाठ—२

सब से अच्छा काम

पिछी रात में एक बड़ा मनुष्य रहता था। उसके बड़ी
 योग्यता से बहुतसा धन इकट्ठा किया था। मंत्रियों का हाथ
 उससे भरने लगा था। बुद्धि के कारण उस व्यक्ति
 जिस जीवन की इच्छा थी वह उससे बड़ा काम था। उसने
 कहा कि मैं जिसके लिए कर रहा हूँ, वह है। सामान्य मनुष्य
 अपने घर की बुद्धि का उचित उपयोग कर रहा है। बहुत
 धन उससे प्राप्त हो रहा है। वह है। वह है। वह है। वह है।
 वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है।
 वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है।
 वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है। वह है।

उस दिने वह सब से बड़ा काम कर रहा था।

पाठ—३

सामाजिक

परिहर्षा—सुमतिराज ! आज पाठशाळा दर में क्यों
जाय ? सब बताया रहन में न बन लग्य है !

सुमति०—जी नहीं पर मैं भीया वहीं जा रहा हूँ । आज
महर्षी का मान काज न सामाजिक की थी इसी में इसकी
बहर हो गई है ।

परिहर्षा—बहुत ठीक । अच्छा यह बताया सामाजिक
क्यों कहते हैं ?

सुमति०—एक जगह का सब शिक्षाकर बैठ जाता, मुक्त-व्यक्ति
जगह-बाजका यदि ब्रह्मचर्य सज्जन का काम यह तो धारणी
देखाए पर सज्जन सामाजिक कहलाता है । इस रूप में यह
मित्र मत्त रहता पड़ता है ।

परिहर्षा—सुमतिराज ! तुम अतिरिक्त सामाजिक कहते
हो पर तो बड़ा अच्छी बात है । किन्तु सामाजिक का अर्थ
समझकर बात तो साहब से सुनो तो ज्ञाप । समझ बात तो
पर है कि सामाजिक जगह बैठने में ही सामाजिक नहीं कह
लायी ।

सुमति०—महाराज ! ज्ञाप तो सामाजिक का अर्थ
का जगह रहने । सामाजिक किस कहते हैं ?

परिहर्षा—मैं सब जानती हूँ पर ज्ञाप कहते हैं—
‘सामाजिक’ ! दो-बो सामाजिक काका देखते कहते हैं ।
पर ज्ञाप दो सामाजिक कहना समझता हूँ । सामाजिक
कहने को सामाजिक कहना कहते हैं । किन्तु ज्ञाप

गीर मन भाव हा सामायिक है। इसका यह धर्म हुआ कि मन न था किये बिना निर्द्वि सामायिक नहीं हा सवता। धन न क हम दायी स बचकर मन की शुद्धि-पूर्वक सामायिक करना चाहिए।

सामायिक म मन शुद्धि का जैसी आवश्यकता है वैसी चक्रशुद्धि का भी। मौन धारण करना सर्वप्रथम है। यदि यह न हो सक, तो हितायह शिव कामन और सत्य वचन ही होलना चाहिए। सासारिक कार्यों में ध्यान उरदान न करना चाहिए। असत्य मत्यामत्य—मिथ्य कथन शुद्ध वचन भी न मानना चाहिए। वचन क हम दायी का परिहार करना कत्या आवश्यक है।

सामायिक में गीर शुद्ध रखना भी आवश्यक है। क्योंकि शास्त्रकार म ईश्वर की शुद्धि का स्मरण रहता है। दूसर साथ "यह प्रवचन है" ऐसा समझ सकन है। गीर की शुद्धि क माय बाध उपकरण और स्थान का शुद्धि का निकट सम्बन्ध है। इस लिए ये सब शुद्ध होने चाहिए। गृहस्थों का अंतरंग शुद्धि बाह्य शुद्धि पर निर्भर है। यह बात सम्य में रख कर साधना सब विधाय अन्तर में होनी चाहिए।

प्रश्न

- १—सामायिक किये कवन है ?
- २—सामायिक का क्या महत्त्व है ?
- ३—सामायिक के समय मन कौं ध्यान करना चाहिए ?
- ४—मन के इस दण निवाडो।
- ५—सामायिक किस लिए हो गया है ?

नो हो कहते—अतिथि सत्कार प्रत्यक्ष मनुष्य का प्रथम कर्तव्य । हम यथा-शक्ति भोजना कर्तव्य पूरा करने का चेष्टा करते हैं ।
उमें तो हम कुछ अधिक नहीं करते ।

उनके इस हठ के कारण कई ऐसे अवसर आ चुके थे जब
हैं सारा भाजन अतिथियों को देकर निराहार रहना पड़ा
था । फिर भी कभी उन्होंने भोजना हाथ खींचने का आवश्यकता
हो समझा । जब जब कि इनका सामान भी धीरे धीरे समाप्त
होने लगा तो उनकी व्याकुलता पढ़ा । बूढ़ा पिता तो अपनी
सहोदरियों पर इतना व्याकुल हुआ कि बीमार पड़ गया ।
पिता के बीमार पड़ जाने पर बेचारा लड़का बहुत घब-
राया । उनकी व्यवस्था इतनी दान दान होगई थी पर किसीने
निर्भी सहायता का आग्रह करना न समझा । बूढ़े की दशा उस
तरावर खराब होती जा रहा था । अन्त में बूढ़े ने अपने जन्म-
स्थान में पहुँचने का इच्छा प्रकट की । उसे विश्वास-सा होगया
था कि वहाँ पहुँचने पर यह सब सफल है । लड़के ने पिता
की इच्छा के अनुसार तुरन्त ही चजने का तयारी की लेकिन
उसके पास इतने पैस न थे कि वे दानों का सयारी ले लें ।
लड़का बेचारा बड़े सोच में पड़ गया । अमीत्रक उन्होंने दूसरों
की सहायता हा की थी । क्या किसी से कुछ माँगने का अव-
सर न था था ।

। आन्धिर लडक के पास जा कुछ दान थ, वे दे कर निम्ना
 तरह उसने अपने बामार पिता का एक गाड़ी पर चढ़ा दिया ।
 फिर पैदल हा गाड़ी के पीछे पीछे भागता हुआ चञ्चल लगा ।
 कई दिन का रास्ता था । गाड़िया आग निकल जाता थी और
 यह बचारा पाइ हा रह जाता था पर रात का जहाँ गाड़िया
 विमान करने का शहरतों वहाँ यह आकर अपने पिता की
 मुष्म करने लगता । आ लाग उन गाड़ियों पर ये वे बराबर
 इस लडक का साहम और उसका पितृमर्क देख रह थे ।
 फिर में यह दगा हो गई कि लडक के पैर दौड़ते दौड़ते झिल
 गये, फफावट में उसका टाँग काबन लगों, जात में उसका
 दुर्बल शरीर टिडुर गया, तब यात्रियों ने दया करके उसे भी
 गाड़ी पर चढ़ा लिया । इस तरह व पिता पुत्र अपने पर
 पहुँच गये ।

घर पहुँचने पर बूढ़ा सचमुच चढ़ा हा गया । व दोनों
 सिंग पुत्र फिर एक बार रोलुमार में लग । इस बार उन्हें बहुत
 आनन्द हा और जीव हा व धनधान हो गये । लेकिन उन्होंने
 प्रतिपक्षकार की अपनी पुराना श्दत का नहीं हाडा ।

प्रश्न

- १—प्रतिपक्षकार क्यों कहा कहिये ?
- २—उदके ने अपने पिता के लिए क्या किया ?
- ३—'रेडरोल जर्जलिज ऑपिक, पाउडर' इन चर्चों के पर्याय
 कौन कौन बताओ ।
- ४—ले अपनी को करने चर्चों में दारताओ ।

तुम तो आगे बढ़े और एयर आ मुमकिन बड़ा उतर प थ स्कूल पर सजात हुए। किन्तु शायी नहीं और वे दनाइन तुम में उने लगे। वे बाहर आये उतर पड़े और आने-आने में आ बच दिव।

हो तो मुझे कभी उस तरह का रैन में दया करने का क्रम उर नहीं मिले है। काद चिल्ला नही और हा हिदुस्मान में भी मा रैन करने का क्रम हा ना है। एड में कल्लहन में।

दुन हा नया हवदा स्थान से सिदागह स्थान तक रा लाना रज करने का व्यवस्था पर विचार हा रहा है। एर में एव स्थान बने। इन में एड स्पेड राड क समीर एड और एड इतरा मा स्कायर क समीर। हावदा में एड स्कायरिजन और एड में एड सौ फ्रंट नचे हा। ए सौ एड कि हुनी नया र्क ठगा म एवम फट एर नचे एड मरह एर।

नए क एनर एनि नाम निगट में मरह एर मुमकिनो का लाना र व्यवस्था हाव एर है। एर एड का एड एर एर। इन एरना रज क एरन क दिने नचे एर एर एर एर एर एर एर है।

प्रश्न

- १-एड एनर कहे एड का एर एर है। एर एड एर एर एर।
- २-एर एर एर एर है।
- ३-एर एर एर एर है। एर एर एर एर है।
- ४-एर एर एर है।
- ५-एर एर एर है।

पाठ—६

चेचक

चेचक बड़ा भयानक रोग है । उसका रागा को बहुत हा
बूट होना है । अगर टीका तरह से उसका चिकित्सा-सुधूरा न
हाता बटुधा परिहार भयभूर हाता है । चेचक के बामार का
बड़ा सावधाना से रखना आवश्यक है । जरा भी लापरवाही
स रागा हाथ नहीं रहता । इस दग में तो यह राग प्राय
हरमात्र गार पडता है । इसमें हजारों की सख्या में बच्चे मर
आते हैं ।

चेचक दून का धानरी है । घर में एक लड़क के हाथ ने
निर यह बटुधा समा लड़की के हाता है । चेचक निकलने के
आमार यहा है कि रागा का पदन सरीना लगन लगता है ।
सके बाद बुखार चढ़ आता है और बन्ना के भा हाता है ।
तमान गार में छोटे-बूट दाने भलजन लगते हैं मुह पर
मुन्नी शीज आती है । कई दिन में दाने बड़े हा जात है और
उन में पार पड़ आता है ।

चेचक के दाने बन्ना इतने मयकर दाने हैं कि उनकी पत्रह
में रागा का गार हा मराब हा जाता है । बन्नी-बन्ना किसी
रागा का झल्ले हा जाता रहता है । इसका कारण यही है कि
चेचक के दाने प्राय तनाम गार में निकलन दे । उनमें आख
आम बन्ना कई भग बटुना नहीं रहना । दानों के मुखने में
गडपड हाथ से ही खराबा उत्पन्न होना है ।

राग का जार बन्ने होने पर दाने स्वयं मुखने लगत हैं ।
फिर बिलकुल सूख जाने पर पपका उतर जाती है । तमा बामार



१—माल का माथ हृद दर्श पर गिर जाय तभी माल गरी
म अधिक लाभ का सम्भावना रहना है ।

१०—दस्तावर का, जहा से माल आता हो माथ मद्रा
ज रहना चाहिये, जिसमे तथा-मद्रा का हाल मालूम रह ।

मरन

-आपका व्यापार कैसा चलता है भार क्यों ?

-किसी वस्तु जति हो बनाओ ओ व्यापार क बल पर बढ़ी-बढ़ी हो ?

-व्यापार-सम्बन्धी कुछ लाभ-लाभ निपम बनाओ ?

-दस्तावर किसे कहते हैं ?

पाठ—११

भ्रातृ प्रेम

ई० सन १५८५ की बात है । एक बार पुनर्गन्त देश क लिस
नगर म एक जहाज गोआ आ रहा था । उस जहाज में
गमग बारह सौ मनुष्य थे । रात में महाहा की जापर
हा स यह एक चट्टान स टकरा गया । अतः जहाज की पैदी
जद होवान में उसमें पाना भर आया । यह दगा देख यात्रियों
। मानें काठ मार गया उहाँन शिन्दगी का आशा त्याग दी ।
जान जहाज का यचना अतमय आन एक डोंगा निकाल
रि थाहामा खान-खाने का सामान साथ म लेकर रवाना
आ । सब ने चाहा कि हम जगा पर चढ़ कर अपने माथ
चों पर चढ़े हुए लोगों से नगा तजवारी से उनका सामना
या और किसी का न जाने दिया । क्योंकि ज्यादा पानु हाने



होगा के रूप जानका भय था। कप्तान सिर्फ उध्मीस आश्चर्यों
। डोंगा में बैठाकर चला। जब विरसि आता है तब झकेला
हिं आता। इस नियम के अनुसार यहा भा आपसि पर
। विरसि जान लगा। कप्तान बीमार होगया और शाम ही मर
। उसक मरत हा "तु तू-में मैं" हाने लगा। प्रत्येक अपने
। सब का सरदार मान लंगा। यह दुदशा देख बुद्ध समझ
। रो न एक बड़े आदमा की कप्तान चुना।

बुद्ध दिन बीते। विनार का बही पता नहीं चला और खाने
। न का सामान समाप्त हान आया। कप्तान ने कहा-भाजन
। अधिक से अधिक तान दिन चल सकता है। इतना सामग्री से
। म भय का निशाह हाना कटित है। इस लिये सब क नाम की
। बिट्टिया डाली आय और प्रत्येक चौथी बिट्टिया म जिसका नाम
। रक्त उसे समुद्र में फेंक दिया जाय। इस बात की सन्ने
। प. नारिंगा। सब क नाम की बिट्टिया डाली गई, परतु कप्तान
। क पादरी और एक पढ़ी क नाम का बिट्टिया नहीं डाला गई
। चाकि उनकी आज्ञायकता था। निदके नाम की बिट्टिया
। किसी उद्धानरंभर की प्रायना करते हुए समुद्र में प्राण गयाए।
। विरसि क गिरन का समय आया तो उसका मगा छाटा
। गई, आ उसा डोंगा पर मवार था हडा-बडा हाकर उठा और
। गई क गज स लिपट कर यात्रा — 'भैया' मेर जात जा आप
। यही मर सकने। आप मेर बडे भारी हैं। आपक ऊपर अपने
। मान न्याहार कर दूंगा पर आपका मरने न दूंगा। आप
। विरसित हैं। आपक ऊपर खा और सब बाल बच्चा का मार
। है। म कुयारा हूँ अतएव आपक यदत्त मरा मर जाना हा अच्छा
। है।

शाय मार का ममतामयी बात सुन बड़ा भारी भौंचकामा





सन १६०० ई० का वार है। दक्षिण अफ्रिका में एक लड़ाई रहा थी। उस लड़ाई में मदद की सहा इम्बरन थी। उसी उप सहा के एक बाइबलना सर रायट वेडन पावेल, ने साचा क्या छोट-छोटे बच्चे भी किता तरह का सहायता कर सते हैं। मुसल पराक्षा के लिए एक स्काउट टाला पहने ल तय्यार का गर। उस टोपी ने लड़ाई के मैदान में यही तदुरा के साथ अपना नाम प्रारम्भ किया। उसने अंग्रेजी का बा बहुत मदद पहुँचा।

एस दिन क्या था स्काउटों के दल के दल तैयार हुए। ठे हा समय में और तमाम दलों ने भा स्काउट सना को योगिता स्वाकार का। और अब तो हर एक दल में, हर एक



और अपने ऊँच धम म ता गया और गहायता का और भी
का स्थान दिया गया है ।

प्रश्न

१—स्काउट हाना क्या अच्छा है ?

२—पहल-पहल स्काउट क्या बने ?

३—स्काउटों से हमें क्या सीखा हो सकता है ?

४—क्या तुम स्काउट हाना पसन्द करते हो और
क्यों ?

पाठ—१३

प्रकाश का पौधों पर प्रभाव

सब क प्रकाश का पौधा और प्राणियों पर क्या प्रभाव
पड़ता है इस बात का ज्ञान करने के लिए अमरावती के
महाराष्ट्र नगर में एक प्रयोगशाला खुली है । प्रयोगशाला में बड़े
बड़े कमरे हैं और उनमें छत्र बिजुल गान्धिका बनी हैं ताकि
सब का प्रकाश घेरावगर्भ होता-जाता रहे । गान्धिका जगह
एक से नहीं हैं । कहीं नील हैं कहीं बैंगनी कहीं लाल और
कहीं हरे । इस रंग के कारण कमरों में जो द्वार द्वार पौधा के
पराग लगाय गये हैं उनपर कड़ा धूप नहीं पड़ती । इन भिन्न
भिन्न रंगों के ताप से सब कार्य करी एक धर्मात्मा से
दूसरे में जानी है ता पग-पग पर उसकी बदलती हुई पाशाक
मिलत हो सकती है । इससे अज्ञाया प्रयोगशाला में खुलने और
बन्द होना बाल लाइ के ऊँचे पुल हैं विनम विनम के ४५ बड़े

पि करत है । बुद्ध मृग वन बुद्ध हरी पात बुद्ध पक्ष बुद्ध
 और बुद्ध दूसरे बुद्ध पाल पहचान कीड़ा का आकार धारण
 क वच जाने हैं । पक्षी चान्द्र गाना कीड़ा पक्षी में पक्षा
 प जाता है कि उन जल्दी बाई पहचान ही नहीं सकता ।
 श का बह मन पड़त है इसलिए उसका रंग और भी
 नी म निजता पुलता हाता है । अमरुद पर रहनवाला कीड़ा
 क उम पड़ का गाड़ी का तरह हाता है । गानर पिन्ड पुगन
 स और मरकुल का अर्धा का तरह हात है और प रहन नी
 क्कर पक्षी हा जगद है । गिन्ड भोगुर और अंगराइ का
 उनक रहन क स्थान घान या तिल क पायी का तरह ही
 ला है । जाल का बाधा जाल का तरह जाल रंग का हाता
 । दुमनी का उराने क तिय तितनी मःपक वनका आकार
 कारण करक रिपता रहता है । इसाम सहज म कोई आय
 सक पम नहीं आता । निजता क पल विविध रंग क इसनिर
 न है कि यह बहुत तरह क जली में आमाना म त्रि जाय ।
 नता क ऊपर क पल हरियानी क निचज भाग की भाति
 निचज रंग के होत है । यह विभाम हरियाला म ही करती
 पर उदन क समय उसक साफ नाज पल निमल आकार
 क नाच द्वि जात है । जब यह जल पर बैठता है ता उस दल
 पर जल का हा म्रम हाता है ।
 । गाह मगर, घड़ियाल अदि जावों क गरीर जल में पड़
 प घृत्त पापर या मिट्टा क टाल का तरह ही हात है । जाल
 उता मंग क पतारी में द्विपर मनस रहता है । घाघ द्वि
 जता और निगद ता अरने से बड़ जीवों का रूप धारण
 करक बुद्ध का दरा दते हैं ।

मार सधन वन म रहता है । हरहर पड़ी में पड़नी हुऐ





पद्य भाग

पाठ—२३

वर्षा

(१)

सू की छपट गरी मई हवि चिति में छारी ।
 पिरा घग घनघार, गगन में वर्षा आई ।
 छार अपने साथ विविध रंगों की सारी
 रन्द्रपनुष की आजब बनी है स्वहृ -विनारी
 है वरा जनना बना महि मण्डल पर भूमता ।
 जजित छताओं का निरख, मुह मुहकर मुख भूमती ॥

(२)

रमाजिये छानरी आज तन पर हरियाजी ।
 मा क दशन हत चढ़ा है मुखपर छाजी ॥
 बड़ी आ रहा सम्रा, आज है डाली डाली ।
 मा का भचन पकड़ गोद में चढ़ने वाली ।
 चढ़ न सकेगी यद्वि से एक साथ सब गाद में ।
 फिर भी मां का सहद रस सम पायेगा मोद में ॥

(१)

अपनति के प्रति निश्चिन्त मन से बढ़ना सीखो ।
 दृष्टि के सर्वोच्च निष्पत्ति पर बढ़ना सीखो ॥
 अस्तिज ज्ञान से मरी प्रकृति का बढ़ना सीखो ।
 विश्व-दीप्ति में हीम पग पर बढ़ना सीखो ॥

पाठ २६

परोपकार

हीनता का दूर कर उपकार में आ सीन है
 प्रिय है वह, क्योंकि अच्छा कम ही बीजान है ।
 दिव्य बुद्धि में जन्म ही से ज्ञान कुछ हाता नहीं
 क्या मनोहर बुद्धि में जन्म ही है हाता नहीं ॥ १ ॥
 जन्म भर उपकार करना, जानियों का धर्म है
 धर्म से पाते न हटना मानियों का मर्म है ।
 मृग जब तक है उदित तम का पना लगता नहीं
 खर-समारथ सामने क्या मेघ टिक सकता कहीं ? ॥ २ ॥
 अन्य के उपकार से ही मान पाते हैं सभी,
 व्यर्थ वेगटाप से हाता नहीं कुछ भी कभी ।
 वस्त्र भूषण जो कहीं खर का तुल्य के तुल्य हो
 ता इससे क्या उभय का एक ही सा मूल्य हो ॥ ३ ॥
 आ पराये काम जाता धन्य है जग में यही,
 दम्प ही का जोड़कर कोई सुख पाता नहीं ।



पाठ—२८

मित्रता

आजो नु दीयात में माली मीन बलाय ।
 लजा तिय बिन मित्र की बारज दीगर जाय ॥ १ ॥
 मीनि कमीनि नन नही दागिद दीपन जाहि ।
 मीन लजा छे धाज है तिनका कपडन नाहि ॥ २ ॥
 मीन कमीन बगावरी एही विगन हुहार ।
 मीन नही बह नुए है जाह विगन जगार ॥ ३ ॥
 धननम बु ननम धरम नम नम बव मीन बनाय ।
 लाना कमीनी नाय कहि लीजे मरम मिटाय ॥ ४ ॥
 कानन न बहवा नहीं मम की पीड़ा बाह ।
 मिन मीन परबानिय सब बह दये रवाय ॥ ५ ॥
 एन मीन न काजिय जमी छानपना बाज ।
 "बाग चारी लगवरी कमजी कर बहान ॥ ६ ॥
 मित्रता विसवात नम जोर न जग में बाय ।
 आ विसवात की घात है बहु अपरमी लाय ॥ ७ ॥
 बहिन मित्रता आरिय जोर तारिय नाहि ।
 नागें दाऊन फ दाय प्रगट है जाहि ॥ ८ ॥
 पियत मैत्रिय मित्रकी लगधन खरख मित्राश ।
 बहद बाये बसत न बर है सरी बाज ॥ ९ ॥
 मुख म बाज मिष्ट जा उर में रागे घात ।
 मीत नहीं बह नुए है, मुरत त्यागिये घात ॥ १० ॥

गौड़ में किसानों का सभा



पाठ—३०

घोरोनिर्घा

[१]

पानि न लिङ्गत गत न वपति न क्वपि सन धार ।
वट-विषम की धारिणः विवति न हार—वपार ॥

[२]

मज्जन्ता ना कट्टे मार, हे मव काम निवास ।
कट्टि की वल रहि गयी रजपूनी का नाम ॥

[३]

ह टाढ़ जा हार प कान्त मार मतिमंद ।
पर पर भारत-भाग ते भर मूरि अयचन्द ॥

[४]

निद्र मुन्रलिद्र कथना कथन निन प्रति सौ-मा वार ।
न ते भार भद भन पिन्द पुकारनहार ॥

[५]

दखन हा न भाम घे क्या न आर हुरि न्ह ।
चित्र निजिन सचि राइग अय धर धर कारनि दह ॥



लहरचन्द मेठिया



Lachand Meethia

प्रिया तु नमः

[illegible]

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठ
मन कावना	१
अमरावत जल	१ १६ ११६ ११६ ११६) ३
हम द'प'य'य' क म	
हम म'न है ?	(११६ ११६ ११६) ५
विषय और उसका मति	७
उच्च मति	(११६ ११६ ११६) १४
निश्चय विमल कावति	१७
पूरण	२२
अमृत का-	२४
दिलता हुए कावार	(= ११६ ११६ ११६) २७
कर्म और पुण्याप का व्याख्या	२८
मुन का पय	३४
धर कावति	(११६ ११६ ११६) ३७
अमृत सत्ता पुण्याप	(११६ ११६ ११६) ४१
उपवास	४३
अमृत	४५
समर का वार उमराव(= ११६ ११६ ११६)	४८
पनप'र कावति	४९
अमृत कावति	५१
रतिरवाव	५२
विषय की अस्तिता	५३
विषय का अमृतमूर्ति(११६)	५४
अमृत	५५

(२)

जहाँ की मिली वायु है जीवदानी ।
जहाँ का भिदा वह म अग्रपानी ॥
मरी जीम म है जहाँ की सुगानी ।
यही जम की भूमि है भूमि राना ॥

(३)

जगी घृत र्थ देह में भा हमारा ।
कभी चित्त म हा सकलान-प्यारी ॥
बनाती रही देह का भी निरागी ।
बिसे धूल पमा सुहाती न हागी ॥

(४)

पिजा दूध माता हम पाजनी है ।
हमार समी कष्ट भा राजनी है ॥
रसी माति है जम की मू उदारा ।
सदा सङ्गों में सुखों का सहारा ॥

(५)

कहीं जा रमे चाहता जो पहा है ।
रहे सामन ज्ञान की जो मदी है ॥
नहीं हर्ष प्यारी कभी मूलती है ।
इस लावनों में सदा मूलती है ॥

(६)

यथा एव है गेह त्यो ही दुःख है
नहीं एव कष्ट म हुआ दुःख है ॥

(११)

दया-नाथ पसी दवें दुद्धि राजे ।
 दगा दग की दख दानी पसीजे ॥
 दुखों में दवान रहें देग प्यारा ।
 बनायें उस सन्ध सन्धम द्वारा ॥



कठिन शब्दों का अर्थ

दिवस—रज । छी—रदन । अ—नी—अधर देने वाली । भिर—मन्त्री
 लख निहा हुआ । दुखी—बीड़ी बोली । दुमिरनी—हम मन्त्रियों की लगी ।
 मन्त्री—मन्त्र । निवेष्ट—गुरु शब्द नीचे है । सिता लेग के, लेग हीन ।
 बन्ध—दखनरी । दुा—दुव । मी—भूमि । दग—दिव । गे—र ।
 दुग—मन्त्र नीचे । दुख—दुख । दगा—दगा केद्वारा दिवार । मन्त्री—मन्त्री
 लगी । दुद्धि—(दुद्ध) बिदे हुए को न करने बड़ा बन्धन का दुध
 बन्धन देने बड़ा बन्धन पदनेह ।



पाठ ६ ठा ।

नियन्ध लिखने की रीति ।

हम किसी विषय का पूर्ण ज्ञान सम्पादन कर लें और उससे
 परोपकार करना चाहें तो हमारे लिये दो ही मार्ग हैं । या तो उसे
 मन्त्र द्वारा व्यक्त करें या जल द्वारा । पंचा या पञ्चन्य द्वारा जो
 विचार व्यक्त किये जाते हैं उनसे सार्वकालिक, सार्वदेशिक
 और सार्वजनिक लाभ नहीं उठाया जा सकता । परन्तु यदि उनकी

(११)

दया-काण्ड लगी हवे दुष्टि शत्रु ।
 दया देग बी मैल ह नी परी न ।
 दुखो ध कष्टान रहे देग प्यारा ।
 बनाये राम राम्य बाबस द्वारा ॥



वर्तित शब्दों के अर्थ

दिवस—दिन । दी—दीया । दी-काँटी—दीवार से दी । दिव—कपड़े
 हल किया हुआ । दुखी—दुखी बाली । दुष्टि-दृष्टि । दया-दिलो से दान ।
 दारी—दरवाजा । दिनेरी—दुःख का बीज । दिव देन के देव देव ।
 दान—दयाली । दुः—दुःख । दान—दान । दान—दान । दान—दान ।
 दुः—दुःख । दुः—दुःख । दान—दान । दान—दान । दान—दान ।
 दान—दान । दान—दान । दान—दान । दान—दान । दान—दान ।
 दान—दान । दान—दान । दान—दान । दान—दान । दान—दान ।



पाठ ६ ठा ।

विषय लिखने की रीति ।

हम किसी विषय का पूरा ज्ञान सम्पादन करें और उससे
 परोपकार करना चाहें तो हमारे लिये दो ही मार्ग हैं । या तो उसे
 यथन द्वारा स्पष्ट करें या जल द्वारा । यथा या यथार्थ्य द्वारा जो
 विचार स्पष्ट दिखे जाते हैं उनमें सार्वकालिक, सार्वदेशिक
 और साधननिरूप ग्रामही उदाया जा सकता । परन्तु यदि ऊर्ध्व

में जिन नयों वस्तुओं का जन्म है उन्हें भी उसी प्रकार विभिन्न विभागों में विभक्त करना । यदि विषय का विभाग न किया जायगा तो गड़बड़ का डर होगा और एक जगह की बात दूसरी जगह स्थिर आयगी । मान लें कि भगवान् महावीर क जीयन पर हमें एक निश्चय स्थिरता है तो हमें इस प्रकार विषय-विभाग करना चाहिए—

१—जन्म के पूर्व का काल और समाधि की अवस्था ।

२—भगवान् का जन्म और बाल्यकाल ।

३—यौवनकाल, मोहिमत्ता और दास्य ।

४—न्यासना ।

५—करकज्ञान की प्राप्ति और धर्मोपदेश ।

६—निर्वाण ।

एक घण्टा और भी ध्यान रखन योग्य है । विषय-विभाग करते लिखने समय यदि एक भाग का उचित से अधिक जगह दे दिया जाय और दूसरे का बिल्कुल हानि तो यह ऐसा भ्रम मायूम होगा जैसे किसी मनुष्य के पैर बहुत छोट हों, गद्देन बैठ हाथ का हा और न छटपट कर आगे निकलता हो । बेगला के स्वर्गीय चरित्रा स्वर्गमार्ग पर चकिमबन्ध बहुराष्ट्रीय में बचीन लखकों का लिए न के इतिहास निरूपण बनाय है । उनमें ओ विषय उपयोग है, यही लिए जाने है—

(१) घण्टा के लिये न लिखा । यदि घण्टा के लिये लिखोगे तो घण्टा भी न मिलेगी और तुम्हारा रचना का अच्छी न होगा । रचना अच्छी होने पर यह भाव ही प्राप्त होगा ।

(२) स्वयं के विषय न लिखें । दूराप में इस समय कनेक्ट घंटे लेखक है आ स्वयं के लिए लिखते हैं, उन्हें स्वयं मिलते भी है

(१) जिस विषय में जिस की गति नहीं है उस विषय में उसे हाथ न डालना चाहिए। यह एक सोधी बात है। पर सामयिक साहित्य में इस नियम की रक्षा नहीं होती।

(३) अपनी विद्या या विद्वत्ता दिखाने की चेष्टा मत करो। यदि विद्या होता है तो वह लख में आप ही प्रकट हो जाती है, चेष्टा नहीं करनी पड़ती। आज कल के लेखों में अंगरेजी संस्कृत आदि भाषाओं के उद्धरण एवं प्रमाण बहुत दिखाया पड़ते हैं। जो भाषा ध्यान की नहीं मायूम उस भाषा के किसी वाक्य या अर्थ का अन्य प्रयोगों का सहायता में बंधी न उद्धृत करो।

(२) सब प्रकारों में धेड़ फलफार सरलता है। जो सरल शब्दों में सहज रीति से पाठकों का ध्यान मन के भाव समझा सकते हैं वे ही धेड़ लखते हैं क्योंकि लिखने का उद्देश्य ही पाठकों को समझाना है।

(१) जिन बात का प्रमाण न दे सकें उसे मत लिखो। प्रमाणों के प्रयोग की यद्यपि सब समय आवश्यकता नहीं होती तथापि प्रमाणों का ज्ञान रखना आवश्यक है।

लिखते समय इन बातों का ध्यान रख कर लिखने से साहित्य की अच्छी सेवा की जा सकती है।

कठिन शब्दों के अर्थ।

निष्पत्ति-सब मुक्त स्थिति का जो हिताहित रहना। निष्पत्ति-अर्थ।
 मूल-अर्थ। सत्त्व-बहुल भाव। सत्त्वविकृत-जो सब समय एक
 ही ही भाव रहता है। चित्तविकृत-बहुल भाव। चित्तविकृत-जो सब
 प्रकृत-अर्थ। चित्तविकृत-सत्त्वविकृत भाव। चित्तविकृत-सत्त्वविकृत

चूहेदानी

ने चूहेदानी अग्रय दत्ता हागी । इसका एक पिपडे
ता है । इसके अंदर चाँद का एक चमकाता हाता है
राजी का टुकड़ा भी म जल्का रगता है । गुनाअरने
हजा उसका रटी का गुनाअ मजम है और यह
न्दर गया । राटी को मु तमा । आर पिपडका रगका
रगका यह हुआ और यह रगका रग हा गया । अब
क लाम से यह अन्दर गया था यहा रगका गुना
रि यह यारर आने के लिए तड़गता है । रमा अफार
तका के लिए भा अनेक कर यह हुए है चित्त म
केम जान है और अने म उनम निरुतना उनके
हा जाना है । बाग का सैर करने गये किता मित्र न
के तिगरट पिआ "अस्माअर करने पर कहा— 'अरी
वेकूक हा रगम न जान कौन घम रगता है । एक हा
रता चित्तना मता है—यहां को दखना थाउ हा है

वस आये कदने में । धर धरे सिंगर पान की आदत पड़ गई । अब पेने कहा स आये मूठ पान कर किताब कापी, खान पाने या किसी पदार्थ से माना आदि स पेस लिए । दो चार दिन इस तरह चला । धर धर चारा की आदत पड़ा । वस अब पित्रद में पैस गये । निकलना चाहते हैं निकल ही सकत । इसी तरह चूरन खाने का ग्रा धियेटर दखन का जल आपस में माली पकने का पान मग्नियार और घुर काश का आर मधि यह सब इस न्युंददानी म पस जान क फल है ।

मदली पकडन कागी एक जम्हा जकडा सता है उसमें रस्मी बाध दता है रस्मी क सिंगर लाद का आकडी में आग जगाना है और फिर उस पाना म डुगा दता है । मदला पानी में देखता है आद क पास जाता है दूध हा डरी दमदर पाद ह आता है कि तु जालय का फिर जाता है दा तान थार पसा ही करता है तब आग खान क लिय मुद साजता है और लाहे को आकडी में पैस जाता है । इसी प्रकार ससार की घुरा आदतें हैं । पहल लग डरत डरन प्रारम करत है—“कहीं बाबूगन देखलें बरी माग नखन, कहीं मास्टर माहयन देखलें।” घोर धर आदत पड़ आत है और फिर तिलिज हाथ म प्रमाथ हर में पान करन लगता है । पान को बा चाहिय कि मयदा साय-पान रहे । घुर निवे मे पड़े । यह पाद रखे कि चारों तरफ पित्रद है और उनस पचन का सदा पान करत रहे ।



(१)

पुनः प्रत्यक्षता का अधिष्ठाता मंत्रि जान पहना है और
मन्त्रि न पुनः प्रत्यक्षता । पण्डित उ मंत्रि है वह मन्त्रि न हो नहीं
होगा । इमन्त्रि न हिन्दी नया प्रमाण का विना प्रमाण अधिष्ठाता न
कर नया प्रमाण । समय बनना है जान पहना है उमन्त्रि
बनना जाना है कि पुनः पुनः का सग एकसा बनाद
बनना क्या उचित है ?

(२)

साधारण मन्त्रि पण्डित न म पण्डित है जैम रागा शास्त्र
क मन्त्रि न । प पण्डित यह नहीं जानन कि यह मन्त्रि ही
उनक भावा मुमन्त्रि उमन्त्रि का आधार होगा । बुद्धिमान्
मनुष्य मन्त्रि न का अधिष्ठाता बुद्धि की कसौटी पर कस कर मन्त्रि
पण्डित बनना जान है ।

(३)

हम किम नया और किम पुनः कहें ? समय अधिष्ठाता है जो
अधिष्ठाता है वह कमा नया मा रहा होगा और आ नया है वह
मा कमा पुनः न आधगा । पण्डित अधिष्ठाता अधिष्ठाता और
अधिष्ठाता का कौन बुद्धिमान् हय और उमन्त्रि का कसौटी
बनायगा ? ।

(४)

हिन्दी कागज का जान नन स हा हमार कसाय को इतिहास नहीं
हा जानी उमन्त्रि में उसका प्रचार करन का भार प्रवृत्ति मां

हानी चाहिए। राग जान करने से ही रागी नीराग नहीं हो सकता। औषध सेवन की भी आवश्यकता है। इसी लिये प्रभु न कहता है—
"ज्ञान प्रियाभ्याम् मात" (अथात् ज्ञान और भदनुकूल चारित्र्य से मुक्ति मिलती है)।

61

आयनकाल परिमित है। उसे सकल बनाने के लिए बहुत समय और परिश्रम की आवश्यकता है। शीघ्रता करा, फिर परीक्षाया न रह जाय।

120

अब स तुम जमे हो तभी से तुम्हारा जीवन प्रतिक्षण कम होता जाता है। तुम्हें भाश्चुर्य है? तो मन जगाकर कष्टमयपालन में लग जाओ।

कटिना शब्दों के साथ

उमल- वारण । निरन्तर- उत्पन्न । पुष्पायुध- वारणी
 उन्नति । अन्त- व दे इत्यर्थ का २ फि रक्त त्व महा श्लाभाय निरान्त क
 छिद मन्त्र मे उम नीला । अवा-नीन- ननिना । इय न्याग कर
 देय्य । उतादेय लान वाली मन्त्र करने योग्य । इति श्री- मन्त्र समाप्ति ।
 अन्तर्दिवन- अन्तिष्ठान ।

पाठ ९ वॉ ।

हिलनी हुई दीवार

पञ्जाब में गुल्दासपुर नामक एक स्थान है । यहाँ बरागियों का गुल्दारा है । वहाँ महन्त दीपचन्दजी के पुत्र महन्त नारायण दासजी बड़े करामाती हुए हैं । उनकी करामातों का विकास बचपन से ही हो चला था । इस बच की अवस्था में ही आपने ऐसा बड़ी करामात दिखायी कि जिसका चमत्कार आज तक भी सबके देखने में आता है ।

इस महाना के पिता महन्त दीपचन्दजी एक मजदूर महन बनवा रहे थे जिस के कारागरो ने अनन्त साथधाना और परिश्रम से एक सुरङ्ग दीवार उठाया जो और जिसका उनकी बड़ा घमण्ड था । एक दिन नारायणदासजी खेलन खेलने उधर जा निकलें ता कारागरो न कहा—“बाबाजी, हमने यसी पक्की दीवार बनाया है कि यदि हाथी ना टकर मार ता न हिले ।

य हाट बाबाजी ता बड़ खिजाडा य और खेलते खेलते काह अद्भुत करामात दिखादना इनके बापे हाथ का खेल था । कारागरो की बड़ बात सुनकर बड़ा गय और उस पक्की दीवार पर अपना पाव रखकर हिजावा ता बड़ मो हिलन लगा । इसक पन्वान् भन्वान् के साथ कारागरो का आर मुँह करक कहा कि देखो यह ता हिलता है कहीं हम गिर न गँडे । कारागरो तथा और लोग इस चमत्कार का देखकर अचिन्त रह गये । महन्त दीपचन्दजी ने कारागरो से कहा कि इसका यसी हो खूने दा इस पर कुछ

मत डाला अथवा वह भी हिजन लगवा और लाय रहा आने में भी इरेंग ।

यह दीवार अब तक वैसा ही हिजता है और इसी से उसे मृतना महत कहत है । बड़े बड़े दगा कारीगर और तिलायता इजानियर उसका हिला हिनाकर दगा है और हरान हात है । किसी को समझ में नहा आता कि क्या भेद है और क्या चून पथर की बना हुआ उड़ा समीन दीवार २०० वर्ष से हिजता है । यह ९ स्तर्भा पर खड़ा है जिसमें ९ द्वाजे हैं । पंजाब भर में यह बात महत नारायणदामना की बालराहा ही माना जाना है ।



पाठ १० वाँ ।

कर्म और पुन्यार्थ का आगम

एक भित्तारी ने चारमेयक के द्वार पर आवाज देकर कहा—
‘है काइ माइ का जान करगा माधु का सजान पूरा । भित्तारी की बात सुनत ही चोरमेयक बात-सगभ उलुखता में द्वार का आर गया ता देखता क्या है कि मज्जिन यज्ञ में एक नयपुषक खड़ा है । शरार पर पूरा घब्र नहीं है । भित्तारी ने चारमेयक का आर आतापूर्ण नेत्रों से देखकर कहा— बाबा सुनका भर आता मित ता चाता प्रसन्न हो जाय । बहुत मूखा है ।’

चोर०—तुम तो बलिष्ठ माधूम जानत हो फिर इस प्रकार आकरें क्यों आत फिरत हो । कुछ काम करो ।

भिमारा—बालू काम क्या कर कुछ जानता नहीं कसर म
में नहीं। माता पिता कोई रदा नहीं दान यात्रक हू।
गुरुजी भग्न आगे मिल पाय।

धार०—म तुम सब दाय हू और चौकी बस म पता हू। न
रिक्तता नहीं पता। एक दिन गुस्सा कहते थे—
बस पट्ट साईं छे पिता नहि अहि पास।

भिमारा—परम दान न सम मया रर परायो आस ॥

धारसयक न रिम्मित हारर गृहा— 'अर। न कहता है मर
लिये बाला अर भैस बराबर है। फिर तुम यह दादा कैसे
याद है'।

मिस्त्रा०—बालू। बचपन में बहुत पत्त किया गुस्सा का सया की
पर मर भाग्य में दिया न लिखा था न आई न आई।
गुस्सा न भा अनुग्रह काक मुझ पदान में बहुत परि
धम किया पर मैं पद न पाया। गुस्सा अब समझते
ता यहा दादा कहते रभीस मुझ यह याद रह गया।

धार०—नून परिधम किया नर गुस्सा भा परिधम किया फिर
भा नू न पद मका यह कदापि नहीं हा सकता। आखिर
म भा ता आदमा हू म कैसे पड़ता हू मर साथ साथ
कैसे पड़ते हैं? हम लोग दयाता ता नहीं हैं? यहाँ बरफ
अपना मतलब गाँवता गहता है। चत हट यहा स।

धारसयक का माता न उस भिमारा का निरस्कार करते
नसकर भिमारा का मान्यता और कुछ अर दकर विश किया।
फिर यह धारसयक का समझाने लगी— यग। गृहागत अनिधि
का कभी अनादर न करना चाहिर। एक दुसा जीव आरा के

प्रकाश स तुम्हारे द्वार पर आय और तुम उस नैराश्र्य के अघकूप में डूब जाओ उसे उतना ही दुःख होता है जितना किसान की छाती में छुरा भाँक देने से। कोई विधवा स्त्री अपने इकलौते बेटे से मिलने जाती है और वह पहा पदुचकर सुन कि उसका दहावसान हो गया है तो उस जेमा मार्मिक बदना होती है, वैसे ही बदना नकार भर तिरस्कार से भिखारी का होती है। अतः उस निराश्रय न करा। कहा भाँ है—

मद स पहन व मुय जा कहु मागन चाहि ।

उनत पड़त व मुय, जिन मुख निरसत चाहि ॥

हा तुम यह कैसे कह सकते हो कि वह भूट खालता था ।

धार०—यह कहना था कि मर मुठ न पना परिधम किया मैं ने बहुत मायाश्रयों का पर पड़ न सका। यह किस समय हो सकता है? मैं न पना है कि जो परिधम करता है सफलता उसका दावा हो जाती है। परिधमा का कोई कार्य असाध्य नहीं होता। मा! उमन परिधम किया होता तो अश्रय पना निम्न जाता ।

माता—बेटा! तू न जा पना है वह सम्य है परन्तु तुम उस रहस्य ज्ञान नहीं हुआ। बात यह है कि ज्ञान से ज्ञान और बल से बल काय के सम्पादन के नियम परिधम के आवश्यकता है परन्तु कवन परिधम से ही कार्य में सफलता नहीं मिलती। इस दलन के लिए नेत्र का अति आवश्यकता है उमक रिता कोई कृत्रिम नज़र देल सकता, किन्तु नेत्र हान पर या अज्ञान परार नहीं देल सकता ।

घोरे०—मुझ शरीर में दखने की शक्ति नहीं रहती ।

माता—हा जिसे नेत्र दखत है पर उनके लिये किमा दूसरी शक्ति का भी आवश्यकता होता है । वैसे ही सफलता परिधम करने से मिलती है, परन्तु किसी दूसरी शक्ति की भी जरूरत होती है । वह शक्ति कम है जिसे हाथ मान्य कहा करने है । जब कर्म परिधम क अनुकूल होता है तभी हमें सफलता प्राप्त होता है । दस्ता ज्ञानगाल और माह-नजाल दोनों साथ साथ पढ़त थे । उनमें माहनजाल परीक्षा के समय अस्वस्थ हो गया । यह कर्म का माहा-म्य है अन्यथा वह भी उत्तम हो जाता । उसने क्या कम धन किया था ?

घोरे —मा तुम कहता हा कम का मान्य कहत है परमने पढ़ा है कि 'कम काय या कान का कहत है ।

माता—वेग ! एक शब्द का अनक अर्थ जान है । जिन धन और साहित्य में 'कम' शब्द का उपयोग प्रायः मान्य का अर्थ में होता है । बनाया जाल शब्द का क्या अर्थ है ?

घोरे०—एक तरह का रंग होता है ।

माता—घोरे कुछ तो नहीं होता 'उड़ा जाल आखों का खाला' यहा ज्ञान का क्या अर्थ है ?

घोरे०—प्यारा पुत्र ।

माता—हा ज्ञान शब्द का हा अर्थ हुए । इसी तरह कर्म शब्द का भी अनक अर्थ है । उनमें से एक मान्य भी है । समर्थ है भिक्षारी में विद्याभ्यसन में परिधम किया हा पर कर्म

करते रहोगे तो कर्म का अनुकूल अवस्था ज्ञान ही काय सिद्ध हो जायगा । यदि तुम भ्रम के भगम निटोहे हो बैठ रहोगे और हाथ पैर न हिलाओगे तो सफलता नहीं मिल सकेगी । समझ है किसी समय कर्म की अवस्था काय-मिद्धि के अनुकूल हो पर तुम्हारे विषय बैठ रहने से वह अनुकूल अवस्था भी हो ही निश्चल पाय । तो तुम हाथ मलने रह जाओगे । तुम यह नहीं जान सकते कि किस समय कर्म की अनुकूल अवस्था होगी ? इसलिए काय सिद्ध होना नई बराबर उपाय करना चाहिये । एक बार की असफलता से होता-न होता बराबर प्रयत्न करने जान की संकल्पना करो हो जाती है । समझ ?

धोरो०—हां हा ! समझ गया कि सफलता प्रयत्न से मिलती है किन्तु उसमें फिर कर्म का अनुकूलता जाननी चाहिये । अतएव ज्ञान काय का मिद्धि के लिए सदैव दक्ष करने रहना चाहिये । हा एक बात पूरा की रह गयी । तुमने कहा था कि कर्म अष्ट प्रकार के होते हैं । यकौन कौन है ?

माता—वेग कर्म के निम्नलिखित अष्ट भेद हैं—

- (१) ज्ञानावगम—ज्ञा ज्ञाना के ज्ञान का टुके ।
- (२) ज्ञानावगम—त्रिम के कारण ज्ञाना का दन्तगुण विपत्तय ।
- (३) वेदनाय—ज्ञा सामाजिक गुण दुःख का भाग कराव ।
- (४) माहनाय—ज्ञा ज्ञाना के चारित्र्य और मयक्य का विगाह ।

- (३) आयु—जा किसी जरूरत में आत्मा का राक्ष रखे ।
 (४) नाम—जा शरीर की अच्छी सुरी रखना कर ।
 (५) गात्र—जिसमें उच्च नाड कुल का भद्र माय उत्पन्न हो ।
 (६) अनराय—जा लाभ भोग उपभोग, दान और
 आत्मा के बज में विप्र उपस्थित कर ।



कठिन शब्दों के अर्थ ।

विभिन्न—आज्यर्थ में पुन । बाला अन्तर भोग बालक—अन्तर का ज्ञान
 बाला । गदागल—यह आत्मा दुष्ट । अनियि—मेदभाज । उपायगत—मृत्यु ।
 अनायि—जा पूर्ण न हो सक ।



पाठ ११ वॉ

सुख की पथ

(युवक के अस्मिन् सन्तुष्टानो महात्मा जिन उस के उपदेश)

१—'मेरा आ इच्छा है वहा हो ' इस प्रकार आकांक्षा न करके
 यदि तुम ऐसा विचार करा कि 'याह जिन प्रकार की
 यत्ना हो, मैं उसे समझता हूँ वह अद्वय करेगा ' तो तुम
 सुखी हो ।

२—राग शरीर की हो बाधा है पर आत्मा की बाधा नहीं है ।
 यदि इसमें आत्मा की सम्मति हो तो वह आत्मा की बाधा

हानी है। लगभग पाँच को ही बाधा है, आत्मा की नहीं।
आ बुद्ध भा क्या न हा तुम सब व्यवसायों में हा कह सकन
हा कि यह बाधा मरा नहीं, किना दूसर की बाधा है।

३—तब कौन तुम्हारा अपादन करता है—कौन तुम्हें बच दता
है? तुम्हारा अज्ञानता ही तुम्हारा अपादन करता है—तुम्हें
बच दता है। जब हम लोग बंधु-बाधक से सुख-समय
में अलग होते हैं तब अपनी अज्ञानता हा हम लोगों का
अपादन करता है। दाई (प्राची) अब धाड़ी पर के लिये
बच के पास से चली आती है तब बधा रान जगता है
किन्तु फिर आ हा उस धाड़ी मिगई हा आती है त्यों ही
यह उसका मुख्य भूत आता है। तुम भी वधा उसी बच
की तरह जाना चाहन हा।

हम जिस में धाड़ी सा मिठाई पर भूज न जाय हम जिस में
यथाथ ज्ञान द्वारा विमुक्त भाव द्वारा परिचालित हों, इसका
भयन रखना चाहिये। यह यथाथ ज्ञान क्या है?

मनुष्य का यह समझना चाहिये। क्या बंधु—बाधक क्या
पर मर्यादा यह सब बुद्ध भा अदना नहीं है—सभा दूसर की
छोने है। अदना गरीर भी अदना नहीं समझना। धर्म के नियम का
सदा समझ कर अपनी सों के सामन रखना। यह धर्म का
नियम क्या है? यह यहा है कि जा बुद्ध वास्तव में अदना है
उसे ही चिरकर धरना दूसर की ध्यान पर दावा न करना। जा
तुम्हें दिया गया है, उसका व्यवहार करना जा तुम्हें नहीं दिया
गया है, उसका लाभ न करना। जा तुमसे वापस ल लिया
जाय, उसे तुम इच्छापूर्वक सहन न हा छोड़ देना और चिन्ने



अब यह समझना बहुत आसान है कि इन् लोग इन दीवारों की रक्षा तब मन धन से क्यों करते हैं। वे जानते हैं कि उनका घर उनका लाइल दच्चे समुद्र की भेंट हो जायगा यदि इन दीवारों की रक्षा न की जायगी।

बहुत दिन हुए कि एक डच बालक पीटर अपने घर के बाग में खेल रहा था। उसका माता न घर के अन्दर से आयाज दी और कहा— 'पीटर! आआ अपनी दादी के लिये यह पनार दाना का इन्धन ले आआ। दादा इसे मेने बड़ी मेहनत से बनाया है। इसे लेकर सीधे दादी के घर जाओ। रास्ते में खेलना नहीं और पीटर स्मॉट आना ताकि तुम अपने पिता के साथ नाम का भाजन कर सका।'

पीटर ने पनार के दान इन्धन का लिया और अपनी दादी के घर का आर चला। रास्ते में उसने कहीं अपनी समझ खेल कूद में नष्ट नहीं किया, न खेल ही शुरू। वह माथा अपने मार्ग पर चला गया और अपनी माता की आज्ञा के अनुसार दादी के घर पहुँचकर पनार का दान उसका दान किया। इनमें से अंधरा हो चुका था।

अपनी दादा से लुट्टा लेकर वह फिर घर का आर लौटा। जिस रास्ते से लौटना था, समुद्र की दीवार उसके पास ही थी। उसने और बड़ा अचानक पिता से कई बार सुना था कि मेरा ही दाना मनुष्यों के गरिष्ठम द्वारा समुद्र की दीवारों से पार होई है और दान का आवन इन का रक्षा कर निर्मल है।

है 'यह क्या' उन सुनसान जगहों में यह रूप 'यह' उसके बाज में पड़ा। वह चौकड़ा दाँवर सुनने लगा उसकी दाता भड़कने लगी।

वटिन गद्दों के अर्थ

मौलि नाम एक गद्द का नाम । इससे एक वटिन उलझाई न
होती । उलझाई का अर्थ है कि जिससे एक वटिन उलझाई न हो
सके । इससे एक वटिन उलझाई न हो सके । इससे एक वटिन
उलझाई न हो सके । इससे एक वटिन उलझाई न हो सके ।
इससे एक वटिन उलझाई न हो सके । इससे एक वटिन उलझाई
न हो सके । इससे एक वटिन उलझाई न हो सके । इससे एक वटिन
उलझाई न हो सके । इससे एक वटिन उलझाई न हो सके ।

पाठ १३ वॉ ।

सर्गादि महीन

पुण्य हा पुण्यार्थ करा उगा ।
पुण्य करा पुण्यार्थ हुआ न जा ।
हृष्य का मय दुष्टजना तथा ।
अथ न जा तुमने पुण्यार्थ हा
तुमने कौन तुम्हें न पुण्यार्थ हा ।
प्राति क पण में दिव्या उगा
पुण्य हा पुण्यार्थ करा उगा ॥१॥
न पुण्यार्थ दिना बुद्ध मयाप है
न पुण्यार्थ दिना मयाप है ।
मयाप ॥ १ ॥ काय मयाप है—
वि पुण्यार्थ करा पुण्यार्थ है ।
तुम न पुण्यार्थ दिना मया
पुण्य हा पुण्यार्थ करा उगा ॥२॥

त्रिषु सुखे यदि मान मां प है ।
 यदि सुख स्वर्गा निज नाम है
 जगत् म करना पुद्गल नाम है ।
 मनुजी ता धर्म मे न उरा उठा
 पुरष हा पुरषाथ करा उठा ॥३॥
 प्रवट निष करा पुत्राथ करा
 दुर्य मे तज हा सब दुराथ करा ।
 यदि बही सुमन परमाथ हा
 यह विमर्षा नद हनाथ हा ।
 नरक हा या दुःख दरा उठा
 पुत्र हा पुत्राथ करा उठा ॥४॥



वर्तमान जमाने के समय

जमाने - जमाने : इस जमाने में बहुत सारे लोग हैं । इनमें से कुछ लोग अच्छे हैं ।
 कुछ लोग बुरे हैं । इनमें से कुछ लोग अच्छे हैं । इनमें से कुछ लोग बुरे हैं ।
 इनमें से कुछ लोग अच्छे हैं । इनमें से कुछ लोग बुरे हैं । इनमें से कुछ लोग अच्छे हैं ।
 इनमें से कुछ लोग बुरे हैं । इनमें से कुछ लोग अच्छे हैं । इनमें से कुछ लोग बुरे हैं ।

— — — — —

पाठ १४ वा

उपदेश

इन उपदेशों के द्वारा हमें यह बताना है कि हमें अपने जीवन में
 कौन से काम करने चाहिए और कौन से काम करने नहीं चाहिए ।

परन्तु इनमें जो आध्यात्मिक विचिन्ताएँ हैं उनमें रागा में उतना साम नहीं होता जितना आध्यात्मिक विचिन्ता में होता है। उदयम-विचिन्ता अर्थात् उदयम द्वारा रागों का दूर करना आध्यात्मिक विचिन्ता है। परन्तु भाँजव ध्यानार हान है तो स्वयं माना बड़ कमजोर है। यह आत्मिक शक्तों के लिये लाभदायक है।

यान विज्ञान की वर में परम्पर विमर्शना क्या जानी है? जरा सी आग पर यदि एकदम पर का डर कायदा लाद दिया जाय तो वह बुझ जायगी। वही हाल सब कायदा निकाल लाने पर भी होता है। इस प्रकार आध्यात्मिकता से अधिक आह्वान करने से भी का अधिक मन्त्र हो जाता है और यान विज्ञान की वर में परम्पर विमर्शना जानाती है। और रागों का दूर करने जाना है। शून्य में भी समझना है कि विज्ञान का ज्ञान कि लिये मानव किया जाता है किन्तु हा अधिक मानव का हा उन आदि का साधन समझना है परन्तु वही ज्ञान जाना है। इसी ज्ञान विज्ञानों के कारण मनुष्य आध्यात्मिकता में अधिक सज्जता है और यह ही अग्नि बड़ पर ज्ञान के आद्य इत्यादि अनेक राग हो जाते हैं। आध्यात्मिक के दूर निम्न शक्तियों में से अधिकज्ञ का राज्ञेय के विज्ञान होता है इसका कारण दिया है कि वे स्वयं के विज्ञान ज्ञान बहुतों चञ्चल हो जाते हैं जिन्हें उनका दूर अन्तर्गत के नगर हो जाता है।

अधिकज्ञ रागों का कारण एवम् ज्ञान का कमी है। इसे दूर करने के लिये आत्मिक उपाय है परन्तु ज्ञान लक्ष्य पर मनुष्य—ज्ञान अर्थात् उदयम हो लक्ष्य में सुदृढ़ता उपय

के अनेक परीक्षालय स्थापित हो गये हैं। इन परीक्षालयों से देश को क्या लाभ हुआ है यह कहना तो कठिन है पर जो हानियाँ हुई हैं वे स्पष्ट हैं। पुरातन भारत में जैसे पारङ्गत विद्वान् हो गये थे वैसे आजकल कहा है 'इस अन्तर्गत के कारणों में एक अज्ञान के विद्यार्थियों का परीक्षा में उत्तीर्ण होकर उपाधि ले लेने का भाव भी है। आजकल प्रतिगत दो ही चार विद्यार्थी एम. ए. में एम. आ. प्रान्तार्जन के लिए शिक्षा ग्रहण करने हैं। जब सबका उद्देश्य उपाधि-धारण और नौकरियों के पद प्राप्त होना है। उपाधि-धारण के इस दृष्टि अज्ञान न माना जाय कि वास्तविक लक्ष्य नष्ट कर दिया है। जिसमें शिक्षा में एक प्रकार की हानिमाना आ गया है।

अपना योग्यता और प्रान्तार्जन की मात्रा का अनुमान करने के लिए ही परीक्षा होना चाहिये क्योंकि यही उसका तात्पर्य है। इन दृष्टि में भी परीक्षा का प्रयोग में परीक्षा सुधार करने की आवश्यकता है। आजकल प्रायः एम. ए. उदाहरण मिलते हैं कि जिन विद्यार्थियों का योग्यता अधिक होता है वे अनुत्तीर्ण हो जाते हैं और कमतर लक्ष्य प्राप्त हो जाते हैं। कभी कभी तो एम. ए. विद्यार्थी भी एम. आ. जानते हैं जिनका अनुसंधान करने की पूरा समझना रहती है और अन्तर्गत पठ्य पुस्तकों का अध्ययन भी नहीं किया जाता।

विद्यार्थियों का निम्न उत्तर देने का शिक्षा का मुख्य अन्तर्गत करना चाहिये। बहुतों विद्यार्थियों का अनुत्तीर्ण होना का कारण यह भी है कि उन्हें उत्तर तो पढ़ा जाने है पर उन्हें कैसे लिखना चाहिये यह नहीं जानते। कितने ही परीक्षालय में प्रश्न करते हो पढ़ा जाते हैं। परीक्षार्थियों का अपने अन्तर्-

न रखता। किंतु हो भारतीय लड़के यहाँ परीक्षाओं में अग्रज निरालों का दावज रखता जान है मुम ऐसा मय न करा। यदि तुम दाव न दागा या तुम गलत करान ता य तुम्हारा बुद्ध नहीं बिगाड़ सका। पराजालय म यदि तुम्हें पानी पाने लपुगा करन अथवा अन्य किता बात की आवश्यकता पड़े तो नुरत अपनी जगह पर पड हा जाआ। टहलता हुआ निरीसक तुम्हारे पास आकर स्वय पूछगा और उचित प्रथ कर दगा।

इन सब बातों पर ध्यान देने से परातार्थी का उर्ध्वो हाना एक प्रकार से निश्चित है।



वर्गिन शब्दों के अर्थ

धृष्ट्या तन्नाम । १ - ३० । कृष्ण-समर-दम्पि । वन्द्यविह
 वाना । कर्मिणा नष्ट-वज । नाना-सन्निव । दण्ड-वन्द्य ।
 इत्या-वैद्य । निर्मल-नि । लक्ष्मणा-पारा ।



मछ नावा प्रकार की पोछाओं में विन्यस्त है। जैसे अग्नि सब का भस्म कर देती है वैसे ही सत्कार के विषय-भोग लोगों का विनाश कर दे देते हैं। अग्नि में प्या प्यो प्यो और इधन पड़ता है वह अधिकाधिक प्रग्नित हो जाता जाता है। सत्कार में भी प्यो प्यो तीव्र मरिना रूप प्यो और विषय रूप इधन पड़ता है, वह बर्तता जाता है।

()

सत्कार का संसार उसका अपकार मछ जाता है। उस अप-कार में संसार में सत्कार का मान हो जाता है वैसे ही सत्कार में मत्त्व अत्यंत और अत्यंत सब मायूम होता है। जैसे मनुष्य अपकार में पड़ा उधर मत्त्व पर पड़ भूत जाता है। इस ही रंग सत्कार में अज्ञान अज्ञान भाव और उन्माद मूढता अग्नि भागने दिखता है। अपकार में सत्कार और सत्त्व सत्त्व दातन है और दातन में सत्त्व सत्त्व निषेध नहीं होता वैसे ही सत्कार में भी विषय और अविषय के पड़ने रहते हैं। जैसे अपकार में अज्ञान के दातन हुए भी अज्ञानी के दातन जाता है उसी प्रकार सत्कार में बुद्धि और अज्ञान रहने हुए भी अज्ञानी मत्त्व और अज्ञान रहता है।

(४)

सत्कार का संसार उसका अपकार मछ होता है। जैसे अज्ञान सत्कार का दातन रहता है वैसे ही सत्कार में अज्ञान सत्त्व निषेध है। जैसे अज्ञान का अपकार मत्त्व हुए भी अज्ञान रहता है।

इन उपजाओ में सस्यार व ५ मर सौर उनक निगरस व
उपाय बनाये गये हैं । इन्हू जनेन वर शुद्धता का सम्माना घातिप।



पठित - सा व स्या

नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।



ਪਾਠ ੧੭ ਵਾਂ

धर्मधीर कामदेव

[illegible]

यदि हम धार्मिकधर्म में वर्तित रहें तो अनाम ही हैं । ह भद्रे' न मी प्रभु में धार्मिकधर्म स्वीकार करके कृतज्ञ हो जा। पसा अरुमर बारबार नहीं आता । नडा अन्यत्र प्रसन्न हु और शत्रु ही धार्मिक हो गया ।

कामदेव का अन्ता पना म कमा म्यत्तु म्मह था इसका अनाम इम घना म मिता है । वाम्मर में उस समय का दापन्य म'वध आनकत्र का तरु तुत्तु वामनामो की छटिक तुमि क लिप न । हाता था । तरु धम क सब अगो का पालन करन क लिय हाता था ।

इम प्रकार धार्मिकधर्म का पालन करत हुए कामदेव ने धौद्ध धर पिता दिद । पर निन उमम धार्मिक का म्यारु प्रति मामों क पालन करने का विचार किया और अपने बहु भाषवों का भ'उन आनि उचित सन्धारा म म'उन करक उनही आजा ल 'देहुव का धर का मार' काय सौपकर म्यारु प्रतिमा (पटिमा) करना म्यारु का ।

वच कामदेव गन में काय'मग म म'ह हुकिर ध्यानम्य हा रह घ ना वक म'लिम्य का अ'मति एनकर उनक पास आया और बाजा—म' दावी कामदेव टोंग रखकर सोणी का टगन रडा है । न तरा बाजा का म्यु जाना है । इस वगुजा म'मि मे न म्यु और मुनि का कामना करता है 'मुकु' करना म'जा य'दना है ना यद टों ट'इद अन्यथा तरा ह'दिया शूर < कर हुगा । अब कामदेव इन मयकर शक्या में तनिक म' दिव

हम लोगों में धर्म और कष्टार्थ के लिये अपने शारीरिक क्षमता सुखों का बलिदान करने की शक्ति भावे यही प्रापना है ।



कदित शब्दों क अर्थ

[illegible]

पाठ १५ वाँ

व्यवसाय चतुष्टय

(मवैदा इकेसा)

कई सुर गाया है कई ता बसावन है

कह तो बनाएत हैं माहे दिगो सभके ।

जानता उनके कामों का नहीं जानता । इसका अतिरिक्त कुछ शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति व्यक्तिगत मामलों के लिए कसबया करके जनता पर जनता का भाग्य के लिए जनता का नये नियमों का मझका दान है । इसलिये आरंभ में वर्तमान स्थिति में कसबया हानिकार है उन्हें हानिकार भी कहिये जा रहा है ।

सामाजिक व्यवस्था के द्वारा प्रतिपादित धार्मिक सिद्धान्त नहीं हैं जिनमें परिवर्तन की गुणाएँ न हों । समाज के नेताओं द्वारा समय का सुविधाओं का दखल करके चलाया गया है । समाज के नेता न तो समय के न उठे हैं इन व्यवस्थाओं का सदा के लिए चलाया था । उन्होंने समय तथा परिस्थिति के अनुसार इनमें परिवर्तन करके न तो सदा के लिए चलाया था । जब ये नियम बने तो उनकी प्रकृति भी इसी परिस्थिति थी । अब अब समाज का परिस्थिति बदल गयी है नियम भी बदल जाने चाहिए । पहले लोगों के पास कसबया करके जनता का भाग्य के लिए दखल था अब यह नहीं है । समाज के नियमों में समाज का भाग्य दखल है अब समाज का भाग्य, कसबया और सुविधा के लिए उसका नियम बदल जा सके है । केवल नियमों की रक्षा के लिए समाज का कठिन भाग्य की काय कसबया नहीं है ।

समाज के नेताओं को मान्यता प्राप्त है । उन्हें धार्मिक कसबया नहीं जाना कसबया समय है उन्हें नियमों में परिवर्तन करने

ता दूर रहा उसमें कुछना आजाता है। इस दृष्टि में प्राचीनता की रक्षा के लिए भा नियमों और प्रथाओं में परिवर्तन करना आवश्यक है और उन स्थापन करना ही है न मलीभातिपरि वर्तन करके उन्हें समान का वर्तमान व्यवस्था के अनुसार कल्याण द्वारा बनाना ही उचित है। तात्पर्य यह है कि अतएव वर्तमान शक्ति राजा का मली भाति स्थापन नहीं किया जाता तब तब उनमें समाज का उपकार नहीं हो सकता।

जैसे प्राचीनता शिव शक्ति हान है वैसे कोई कार्य नवीनता शिव भी हान है। ये सब नियमों का पुराना और नया हुआ कह कर उनका भ्रमना किया करने है। ऐसा करना भा उसी प्रकार का भ्रम है जैसा सब नवान नियमों का भ्रमना करना अतएव अतएव पुरान नियमों का पुरान समझना भा भूल है। हमारा समाज में अतएव ऐसा शक्ति है जो पुराना शक्तों में मिलना चुनती है। उसी शक्ति में यदि वर्तमान समाज का ज्ञान हो तो उनमें परिवर्तन करने का कार्य आसानी से नहीं है। हम पुरान नियमों का अतएव नये नियमों का स्थापन करना चाहते हैं वह इसलिये नहीं कि पुरान नियम खराब हैं परन्तु इसलिये कि यदि शक्ति समझ के समाज के लिए उपयोगी रहे होग परन्तु समाज के वर्तमान स्थिति में वे उसकी शक्ति लाभायक हान के अतएव उनमें हानि कर रहे हैं। जो नियम जो प्रथा, जो कर्तव्य और जो शक्ति न समाज की वर्तमान स्थिति में शक्ति शिव कल्याण कर हो सकें उन्हें स्थापन करना और उनका प्रचार करना—चाहें वे नये हो या पुरान—अतएव समाजहितैषी का कर्तव्य है।

मनन मे हात बाता हा निवा हागी परनु यह धारणा
गान विचार पर अलक्षित है । ससार म कोई वसी वस्तु
नहीं निम्हा किवा न किता रूप में दुःखपाग न हाता हा ।
इसमे उन वस्तुओं का हा नष्ट कर देना क्या उचित है ? कुछ लाभ
गाह या करक गावों का दुःखपाग करन है इस मे गावरा का ही
नाश कर दिया जाय एसा काद विचारवान व्यक्ति नहीं कहस
कता । कुछ लोगों ने यदि आस्थों या धर्म का दुःखपाग किवा है ता
राम मे धर्म का हा लाभ कर देना उचित नहीं । एसा कर्म बाध
ता उसका दुःखपाग करन वानों मे मा अधिक अपराधी है ।

हा यह मानन म काद इन्कार नहीं करसकता कि बहुतर
मत मतों ने अग्न नया दूसर धर्मों का विवृत करने की चेष्टा
का है । जैनधर्म एम धर्मों म स एक है जिनपर अगणित
असंख्य आक्षेप हुए है । एक सत्र स बड़े आक्षेप पर इस पाठ में
विचार करना है । वह नास्तिकता का आक्षेप है । अब जैनो ने
धर्म का विराध किया ता जनता का विचार बेहो से
उठ न लगा । इस स ग्रहणों में बडा लाभ मचा । अत म
उहा न एक पता युति निहाना कि लाभ वदा पर अविश्वास
न करे । वह युति यह है कि ना वद का नहीं मानते उन्हें
नास्तिक कहन लग । ईसाईय नास्तिक का आ असहा अर्थ
(आ परमात्मा का न मान) या उसर हरनाज पर करमनगन्त
लगा बनाया— 'नास्तिकता धर्मादि' —अथान् वद को निन्दा
करने वाला नास्तिक है । तथ म अकर आवितक जैनियों पर प्राय
यह आक्षेप किया जाता है कि व नास्तिक है परनु यदि जनधर्म
का नास्तिक धर्म बहा जायगा ता ससार का एक मा धर्म
नास्तिक न कहना सकगा ।

है यही नहीं ७। मील की नज़ी से नौडनी हुए मात्र उनका गारार पर से पार हो जाती है। यह अलौकिक बल है देवी शक्ति है। सुनकर आश्चर्य होता है दमकर गता नभ उगला द्रवानी पड़ती है। किन्तु य धार्मिक दायन में असाध्य मायम पढ़न पर भी असमर्थ नहीं है। प्रयत्न करने पर लगन राममूर्ति वैसा बन सकता है। राममूर्ति स्वयं कहते हैं— निरुलता क्या है यह राममूर्ति ने कभी नहीं जाना। एक बार दो बार तीन बार पांच बार दस बार कागिण करने लग सकलता अत्यन्त मिनता कार्य का साधयामि गारार का धारयामि —कर्मों का मन्त्रा यही हमारा सिद्धान्त है।

राममूर्ति में तो अलौकिक बल काय हम देखते हैं यह उनका लगातार कागिणों का फल है गारार का दान नहीं है। बचपन में राममूर्ति बड़े दुष्ट बन पतन थे। दो हाथों की उम्र में उनकी माता मर गयी थी। पांच वर्ष की उम्र में ही उन्हें गमा (सास का राम) हो गया था। उनका गहरा पाना और रागा भूमायूम होता था। अरनी दुबलता पर उन्हें बड़ा दुःख था। माम, लक्ष्मण हनुमान आदि का क्याण सुनकर उठ साचा करने कि वहाँ मैं भी क्या बनवाने होता। गहन में पत्तन लिखते समय भी यह यही साक्षात् करने थे।

कामन करने का म लग रहने में ही काम नहीं चलता। कर्म और पुण्य करने का लक्ष्मण का कायस्थ में बदलते और ससार में बिड़िया होना है। वालक राममूर्ति ने भी कामन करने की शुरुआत की। अरन गहन में भी यह पुण्य करने आदि राजन लग बुद्धि निता नई बिना जाता लग म भी कामन का पर बुद्धि लाभ न हुआ। हाथ का गेना लग में कामन करने लगे। अन्त में यह बंदक करने और बुद्धि लड़ने लग। यह कहते हैं—

धाँडा सा मात और रही । दिन में द्वा तीन मेर बादाम उनक पेट में जाता और कभी कभी एकप सर मलाई में साना चादी क थक भा चाट जाने । दूध पसन्द नहीं था । मास महली शराब आदि मे ता सदा दूर रहन अथवा इन अमन्य पस्तुओं क सदा त्यागी हा थ ।

बज ता अनाधार हा मया । दहका चढ़ार—उतार और सुन्दरता दखकर साग सिद्धान किन्तु अर राममूर्ति का अपने बज का पराछा दन क लिय दृष्टग्राह्य शुरू हुई । मयाग की बात है कि उसी समय युजेन सैगडा नामक प्रसिद्ध यूरापीय पहलवान (जिसक डबेल का कसरतें आप भारतवर्ष में भी प्रचलित हा रहा है) सत्वार म अपने बल का दका पाता और सत्वार क नामी नामा पहलवाना का पदाडता हुआ हिंदुरवान में पहुँचा । जब मद्रास आया राममूर्ति उसक बल की आज करने का याकुल हा गये । व कहत है—

‘सैगडा क बल का पराछा किस प्रकार हा और मैं उसक आगे टिक सकूंगा कि नहीं यह जानने का मैं उद्दिष्ट हा गया । अखिर मैं सैगडा क नौकर स दास्ता की । एक दिन उस नौकर का मैंने नाला चाप खिलादा और अब वह नग में उघने लगा मैं तम्बू म घुसगया और सैगडा क ‘डम्बेल्स का आपमाया । मुझे तुरन् विश्वास हा गया कि सैगडा कबल अपना घानाओं से काति लूट रहा है । वह बला है जरूर किन्तु जितना यह बनाता है, उतना नहीं । दूसर हा दिन उस मैंने खेल दिया—कुत्ता लड़ने का ललकारा । किन्तु यह समझ गया कि मैं उससे थला हू इसलिय उसने यह कहकर अरना रणत बचायी कि मैं कान आदमी में कुत्तो नहा लड़ सकता । मुझे

किया। सैयदा ने बाँझ उठाने में अधिक नामयरा पाया थी—यह पचास मन का बाँझ उठा लता था। राममूर्ति उसमें दुगुना तिगुना बोझ उठा लता। अपने बल में लगभग सौ मन का हाथी बल्ले पर रख लेते थे यह बात तो मसार प्रसिद्ध है।

हिन्दुस्थान में अपने बल का नका पत्र कर राममूर्ति विदेशों में भी गये। इंग्लैण्ड फ्रांस आदि यूरोपीय देशों में भी उनकी धाक पड़ गयी। यहाँ नहीं उनकी वारता देखकर कितने विदग्ध अलने भी लगे। उन जागों में राममूर्ति का मार डालने की भी काशिया की। मलाका द्वीप में इन्हें दस बार जहर दिया गया। पहली बार तो जहर का कोई जलण भी मानुष नहीं हुआ। उनकी बलवान आतङ्का उसे माफ पचा गयी किन्तु दूसरा बार उन्हें इतना जहर दिया गया जिसमें बलवान बाँझ तक मर जा सकता था। जहर के जलण मानुष ही राममूर्ति लगाए बाँधकर पाँच हजार दण्ड कर गये। पसीने के साथ बहुत कुछ जहर निकल गया तो भी बहुत दिनों तक वह छाट पर पड़े रहे। यों ही फ्रांस में भी कुछ दृष्टा ने जाल रचकर उन्हें मारने — किया। राममूर्ति छाती पर हाथी घड़ान के पहल

[illegible][illegible]

दोनों लोको का एक ही भाव है। वह दोहो — व एवमक। इसका अर्थ है
 मन्त्रा वन्मर्त्यो वन्मन्त्रा दे वन्मन्त्रो मन्त्रा दे। ऊपर एक म
 मन्त्रा दे वन्मन्त्रा दे। पर मन्त्रा दे।



पाठ २२ वाँ

३७

गुरुजी—माँहन! इस सख्तना में पूछा कि यह क्या है?

माँहन—गुरुजी! सख्तना यह किस बनादगा? यह न तो सुन
 सकता है न बोल सकता है।

गुरुजी—यह सुन महा सकता, जान सकता है।

माँहन—नहीं।

गुरुजी—क्यों? तुम जान सकते हो और यह सख्तना नहीं जान
 सकता। इसका क्या कारण है?

माँहन विचार में पड़ गया। यह यह तो जानता था
 कि सख्तना जान नहीं सकता क्या न उसमें ज्ञान कति
 नहीं है पर वह यह नहीं जानता था कि क्या नहीं है।
 वह सोच ही रहा था कि गुरुजी ने दूसरे कोइक म
 कहा—“महेन्द्र! तुम बना सकते हो कि सख्तनी क्यों
 जान नहीं सकता।”

महेन्द्र—नहीं साहब! क्यों ही बनाएँ।

गुरुजी—क्या तुम तुम बालों पर—आ निम्न हमारे दस्तन में
 बना है—विचार करना चाहिये। सख्तनी नहीं जान

ही जिनका अगर है व अधिगोचर कहलाते हैं।
उमर बढ़ने वाले मराना के पक्षर। जल ही जिनका
गौर है व जलकाय कहलाते हैं। इसी प्रकार पार्श्व
के जलन समझना चाहिये।

इन सब अंगों में गति का अन्तः कुछ विभिन्नता
नहीं है परन्तु कमाइय के कारण उनका गतियाँ
अपन हो रही हैं। जब अन्तः सब कर्मों से विलग
हो जाता है तब उमर। सब गतियाँ स्पष्ट हो उठती
हैं। उसी अवस्था का मातृ कहते हैं। व आरम्भ के
मकर और मर हुए।

माहन्—दूसरा द्रव्य कौनसा है ?

गुरु— त्रिषुमें उपयुक्त गतियाँ नहीं पायी जानां वह जीव
नदा अघान् अघात है। मुख्य द्रव्य यहा द्वा है। इन में
म अघात के पंच भेद हैं—१। पुष्पगत (२) धम (३)
अधम (४) अघात (५) काज।

माहन्—पुष्पगत किसे कहते हैं ?

गुरु— त्रिषु हन ह सके चार सके सृष्ट सके दल सके
वह पुष्पगत द्रव्य है। दूसरे शब्दोंमें त्रिषुम स्पष्टरस गंध
और रस (रस) पचा और वह पुष्पगत है।

माहन्—गुरुजी। अगर मुझे देख सकता है तो मैं पुष्पगत हुआ।
मैं सब विद्याविधियों का ग्य रहा हूँ तो मैं पुष्पगत हुआ।
समाज के मना मनुष्य एक दूसरे का देखते हैं तो वसव
पुष्पगत हुए किन्तु मनुष्यों में ज्ञान और देखने का
शक्ति है इसलिए उन्हें तो जीव कहना चाहिये।

गुरु— हा, एक मनुष्य दूसरे का देखता है, वह साधारण

पहुँचाना है जो कही धूप में चटाहियों का सहायक होता है। यदि धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य प्रेरणापूर्वक चलाने और दहरान जगें तो विनयम स्थिति उत्पन्न हो जाय। क्योंकि जनों निम्न है 'यावक' है और किसी में कोई निबलन नहीं है। यसाहा ना धर्म द्रव्य दहरान न दव और अधर्म द्रव्य चलन न द।

चौथा द्रव्य आकाश है। यह सब यन्त्रोपा का सब काम प्रगट करता है। यदि आकाश न होता तो किसी का कहा ध्यान न मिलता। इसके दो भेद हैं—
(१) लाकाकाश और (२) अलाकाकाश। लाकाकाश आकाश के उस भाग का कहते हैं जहाँ जीवादि पांच द्रव्यों का सत्ता है और अलाकाकाश उस कहते हैं जहाँ आकाश के अतिरिक्त और काय द्रव्य नहीं पाया जाता। पाँचवा अधार कान है। काज उस द्रव्य का कहते हैं जो चीथादि पदार्थों के परिचरित का कारण होता है। काज के सिवा अन्य द्रव्यों के कारण अस्मिकाय अर्ध जगाया जाता है यह यथ नहीं है। अम-आवास्तिनाय पुनगलात्मिकाय आदि।

समाप्त में जितने पदार्थ दाम जान हैं, उन सबका इहाँ ६ द्रव्यों में समावेश है। इनके अतिरिक्त और काय द्रव्य नहीं है।

वर्णिन शब्दों के अर्थ।

दस्ता- अक्षर। द्रव्य- न। अकृत- अकृत। विमला और अम

(५४१५५)

सगर मर दृष्टक कान्त का अंग दृष्ट
 दृष्ट न विद्वान् का वर मं बंध है ।
 तम तम है धर्म धर्म का धर्म मं
 मर मर विर धर्म मर मर मर है ॥
 मर मर मर धर्म मर मर मर मर
 दो हा द्रि मर मर मर मर मर है ।
 मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर ॥३३

(५४६ ५)

मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर ॥३३

(५४६ ५)

मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर ॥३३

जावन न विग लानी जरा न तुदार काना,
हीना भई सुत्रि पुत्रि सबै वातऊनीसा।

रज घट्या ताथे रट्या चातय का चात्र घट्या
और सत्र घट्या एक निम्ना दिन दूनीसा।।

अहा इन आयन अभाग २२ नाचि जाना
वातगग जानीमार दयारम भाना है।

चावन क जार धिर जगम अन्तक जार,
जानि ज सताय कहु रम्ना न काना है।।

नेई अण जात्रगम आय परलाक पास,
लग वर दग दूग भई ना नधाना है।

उहाई क मय का मरामा जान कावन है

१ या हा डर नाकरा न जाग नाथ लाना है।।

१ जाका इट चात्रे अमिट्र म उमात्रे जासा

१ चात्र मुक्ति माहि जाय भा मत्र रहात्र है।

१ वसा गरज म पाय त्रिप त्रिप खाय ग्याया

जमे काच साट भुङ मानक गमाय है॥

१ माया मदा बुद्धि भाजा काया वन नच दूना

१ आथा वन लीना अत्र कहा वनि आय है।

१ तान त्रिप सग्न ताने नाच नन विष टाल

कहा यदि यात्र बुद्ध यदन त्रात्रे है ॥२॥

(मलगय मरवा।

देखहु जार जरा भट्ठा जमराच महोपति का अगवाना।

उत्तरव्य अत्र निम्नान धरै, बहु गगन का सग कीज पुजाना॥

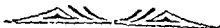
बायपुरा तनि भाजि बल्ला निहि आग्रज जायनभूष मुमाना ।
हूँ लई नगरी मगरा निम नय म स्वाय ॐ नाम निसाना ॥९॥

गदा ।

समतिहि तनि जायन समय सञ्च विषय विचार ।
खलसाई नहि स्वाय, जम—नवाहिर सार ॥१०॥

कठिन शब्दों के अर्थ

अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।
अर्थ (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ । (अर्थ) शब्दों के अर्थ ।



पाठ २४ वाँ

आत्मा का सिद्धि

यथा! बहुत लोग कहा करते हैं कि आत्मा कोई चीज नहीं है। किन्तु विचार करने पर इसका अस्तिव्युत्पत्ति पक्का है। यह तो सभी अनुभव करते हैं कि गरीब से मित्र भी कोई काम अवश्य है। आज कल के अनेक पश्चिमाय वैज्ञानिकों ने इतनी उपलब्धि का है कि वे विभिन्न कल पुरानों के सहार स्वतः कार्य करने वाले यन्त्र बना लगे हैं पर ये यन्त्र भी कबल एक ही काम कर पाते हैं जिसके लिये वे बनाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त उनमें साधन सम्पन्न परिस्थितियों पर विचार करके घिसा कार्य करने की शक्ति नहीं होता। इसका कारण स्पष्ट है। ऐसा समय आ सकता है जब बहुत बड़े यंत्रात्मक और डाक्टर गरीब का रोगनाश कर दें किन्तु सच्चा प्राणिव्यसृष्ट का स्वभाव ही से चेतनवाना आत्मा निरर्थक प्राणव्यसृष्ट है उस कोई जड़ वस्तु ही के समीप में नहीं बना सकता। जड़ के समीप में जड़ पदार्थों का ही उपलब्धि हो सकता है। स्वयम् का नहीं। यही प्राण जिसमें पादचालन है वही चेतन आत्मा है।

जगत्पूज्य विद्वान् आत्मा जड़ पदार्थों के समीप में पड़ा नहीं जाता ना फिर किस तरह उपासना होता है? उपर आत्मा का जो चरण बनाया गया है उसी पर विचार करने से इसका उत्तर स्पष्ट हो जाता है और यह यह कि आत्मा उपास्य होता है नहीं। अन्तः यह ध्यान हो जाना है कि आत्मा सदा सदा ही है और सदा रहता। परन्तु गरीब आ

उसका आधार है, अश्वमेध हो जाता है तब वह दूसरा आधार अपना दूसरा शतर धारण करता है । यमा नहीं है कि गरीब के साथ आमा भी नष्ट हो जाता है । यह न कभी मिटता है न बनती है । यह अनादि और अनन्त है । तथा पृथिवी दयादि पत्र नृना म बना हुई नहीं है ।

आमा के विषय में एक बार प्रदत्त राजा ने महाराज केनी धर्म में अनांतर किया था वा पट्टन मनारचक और शिक्षा है प्र नी राजा ने कहा — महाराज 'एक बार का बात है कि हमारा कालमान एक बार एक कर लाया । मने उस एक लाह के कमर में हम बिधा । हमारा इस दय का था कि उसमें एक कर मने एक लाह का भी प्रयोग न हो सकता था । यही दर दान तथा कि वह हमारा हुआ था । महाराज ! यदि गरीब और आमा भिन्न पदार्थ हान तो आमा कहा खनी जान ? उसका बाहर निकलने का काँ माग न था । हमने तो यमा शान मान है कि दानों एक ही है ।

राजा का बात मन कर बनी धर्म महाराज राज— 'म अन्' मुद्राया बनी शक नहीं है । अ पक्षपात है । उसकी गति बिना से शकता सकता । मित्र न हान पर मा अय का हमन और अगमन हो सकता है । एक महान का विन्तुज बंद कर का एक मा छिड़ न रा । विर उसका अंदर राज बडगा आप ता तुम उसका अंदर मन महन हा ग मने 'अश्वमेध मुद्रा अश्वमेध — अ विर हा के शतर निकल सकता है ता अश्वमेध का न विर मुद्रा क दय न विर महता ? अश्वमेध विर महन है । अश्वमेध यह कि हा न हान म आमा और शतर का पक्षता नहीं सिद्ध शक्य ।

तो कारकी बात मान्य हासकनी है अथवा मेरी वही बात होक है कि कामा और गार वरु है ।

क०ध०— गरा । तुम्हार अन्दर जानन की शक्ति है पर हारो काम सुधा दन से वह दय जाता है । उसी प्रकार कामा में अनन्त शक्ति है पर वह कर्म रुपी होतो काम स र्था दुद है । मान ला समान बज पाजे हा सुवक है । एक क पास नई और मजबूत कावक है और दूसरे क पास पुराना और कमचार । क्या वे दोनों बराबर काम उग सकत है ?

प्र०— नहीं महाराज ।

क०ध०— बस । इसी प्रकार बालक बूढ़ और युवा लोता की कामाये अनिरखने हुए भा बराबर मार नहीं पहुन कर सकती ।

प्र०— महामन् । कित्ता समय हमारा कातवाल एक और पकड़ कर मर पास लाया । मैने तजवार से उस चार क टुकड़ टुकड़ करक उसमें कामा का बहुत खाजा पर वह कमी न दिखाया दो । गर फिर में कैसे उमे शार स मिथ मानू ?

क०ध०— राजन् । वह में पड़त हा कद सुका है कि कामा अमूर्तिक है और जा अमूर्तिक है उसे तुम कैसे देख सकत हा ? चक्कर पथर में अग्नि शमी है , अरदा का लकडा स भा अग्नि प्रप्यगित की जाती है, पूज में सुगंध हाता है किन्तु चक्कर अरदी की लकडी या पूज क टुकडे करक भा तुम शर्म

आगत थे उसी अग्रस्था में बिना ज्ञात कि उनका आग्रह मनुष्य
निका त कसमय था किन्तु प्रकृति न पदा एक विधित्र रूप धारण
किया। पदा एक प्रकार के पड थे जो जलधरक कृष्ण कह जात
थे, इन्हीं में प्रचुर उल मिलता था। और टापू के निवासियों का
सारा काम इन्हीं में चलाता था। यात्रियों में इनका उच्च स्थिति
और उनका हान भा लिये जाता। इनमें से एक अग्रज योश
या सुहृद अग्रज न थे कर्मभूत कृष्ण के विषय में गतिविधि है—

यह कृष्ण आर मित्र दत्त के समान भाग १—१५८
कुछ ऊँचा और डालियाँ घाना होता है। इसका पत्तियाँ का
ऊपरी मल श्याम और मातल सफेद होता है। इसमें न तो फूल
लगता है न फल। दिन का पत्तियाँ सूर्य का वरुण किरनों में
मुल्लस जाता है पर रात को उनमें पानी का दूँद टपकने लगती
है। हर रात के साइत का टापू उल्लस हर पर दल्लस काटल्लस
हाता है और यह काटल्लस हर भा वल्लस जाता है जब दल्लस है
कि पानी के उल्लस काटल्लस हर दल्लस लगता है उस
काटल्लस से नहीं जाता दरु देव में वल्लसता काटल्लस दल्लसने भा
दल्लस है। बहुत जांच के अनंतर यह निश्चय किया गया है कि
काटल्लस पद से एक रात में कम से कम बार दल्लस लग ० पानी
निकलता है।

यह कृष्ण टापू भर में मिट्टी है। इनमें निवास हुआ उल्लस १५०
मील ऊपर से टापू के दल्लस जाने लगता है और पानी की काटल्लस
दल्लसता काटल्लस करता था। अग्रजतात्त्व इस महिषासुर विष
रक्त का समानि करत है—“यदि मेरे जाना जाँचो इस दल्लस

० दल्लस १० दल्लस दल्लस दल्लस है।

गुरु— धनस । यह जीव अनादि काल स राग द्वेष कथा होकर
 करने केना धन का भूला हुआ है । जैसे एक अनाशय
 निर्मल मधुर और शीतल जल से मरा हुआ है । पीछे
 उसपर काह अथवा शैवाल दृग् गया । अब ताप गुरु
 बसे न रहे । एतल जैसी तज्ज्वान रही निर्मलता नष्ट
 हो गया और मिटास दूर हो गया । यही हाल जीव का
 भी है उसका केनाधर्म कुसंस्कार और राग द्वेष से
 दूषित है । एक बात और समझ लेनी चाहिये कि
 शैवाल जल से ही उच्छिद्य होता है । इसी प्रकार राग द्वेष
 इत्यादि नाना प्रकार का बामनाधर्म जीव से ही पैदा होकर
 उसा के केनाधर्म का दूषा दतो और कलक कर
 दाता है । इन बातों में अन्तर यहा है कि जीव से
 राग द्वेष इत्यादि का सम्बन्ध अनादि काल से है किन्तु
 शैवाल और जल का सम्बन्ध अनादि काल से नहीं है ।

[illegible]

द्वीप के अंदर वहा के जंगलियों का हाल खाल जानने के लिए भेजा। कोलम्बस के साथी जब उस द्वीप के मोनरी भाग में पहुँचता वहा उन्होंने जंगल के बार्सियों के मुँह और नाक से धुँआ निकलने देखा। यह देखकर उनका बड़ा विस्मय हुआ। लौटकर उन्होंने अपने सरदार का इसकी सूचना दी और कहा कि काले काले 'क्यूबा' निवासी लोग घूमने हैं और बड़े बड़े पत्थर का लपेटकर उनका एक सिरा जना दूसर का मुँह में रख जेतान की तरह धुँआ निकालते हैं।

ऐसा दिन से इस जैतानी और जंगली आदत का आरम्भ समझिये। कालम्बस उन पत्थरों का कोई आजाब चीज समझकर आजाबखार में रखने के लिए उन्हें यूँप न गया। वहा कुछ अन्य मिश्र तथा आज़मा। स्पेन देश के आमागों ने उस जंगली आदत का मना लेना चाहा। बस फिर क्या था? जंगल जंग दसादसा एक दूसरे की नक़ल करने एक प्रथा चल गयी।

१४९४ ईस्वी में जब कालम्बस ने दूसरा बार अमेरिका की यात्रा की तो उसके साथियों ने वहा के आदिमियों का तबाहूँ सुनत देखा। उनकी खेती भी यूँप पहुँचा और आमागों के घर का स्त्रियों ने दिहगा दिहगा में सुघना का प्रयोग आरम्भ कर दिया। भरा समाज में जब हाँको का भंडो लग जानी तो लोग हसने हसने जाग पाग हाँ जान प। घर घर दिहगों की यह चीज़ साथ समाज का स्त्रियों का प्यारा आदत हो गया और तम्बाहूँ सुघना एक नया फैजल होगया।

१५०३ ईस्वी में स्पेन का जग पारागुआ नामक आत विजय करने गया था वहा के निवासियों ने बहुत बड़ी खेती में उनका

दत्ता जाता है। यह सब रूप में आते हुए इस कुरीति का फल है।

बच्चा 'यदि तुम में काद तम्बाकू पाना खाता सुपता या चबाना है तो हमारा नुमस प्रयत्न है कि अपनी बुद्धि में विचार करे कि इसमें तुम्हें क्या लाभ है' तुम्हें मायूम हाना कि तुम अपना समय धन और स्वास्थ्य यथार्थ रद्द हो। क्या अमेरिका का एक चगनी चाति का इस गलित प्रथा का अन्त माना तुम्हें आभा दता है'

तम्बाकू एक बड़ा जहराला पदार्थ है। आध मेर तम्बाकू में जितना जहर होता है उसका पूरा प्रमाण मनुष्य पर हो सकता उससे तीन सौ आठमां मर सकने है। एक सिगरेट के धूप के प्रमाण में ११ आठमियों की मृत्यु हो सकती है। तम्बाकू का रस मर्ना का हानि पटुचान खान काही के मारने के काम में आता है। अमेरिका के एक लाखों मर्न तम्बाकू का रस इस काम में लाते हैं। यदि आप सिगार का मूल कर पछा का चौड़ा करके अगले पट पर रस में और बढ़ म पाय दें तो कुछ दर बाद इन के धूप का प्रमाण आपकी स्वयं मायूम हो जायेगा।

आ तम्बाकू इतना विरल है उसका मर्न में नाराग मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा बुद्धिमान पात्रक इसका स्वयं समझ सकते हैं। अनुभव का दान है कि मर्न में अब किमा तम्बाकू या सिगरेट पाने वाले के काम इसका मर्न न करने वाला मनुष्य का बंदना पाना है तो उसकी जान आपन में आ जाती है। यही दगा उन लोगों का होती है जो पहन पहन तम्बाकू पाना सखने हैं। इनका दान बच्चे जब अचानक उस कमरे में खच आते हैं

मिथ्या न हो सके। लोभ के कारण ही। लोभ ही हम
मित्रों का पक्ष लाने वाला माना जाता है। लोभ ही हमारे लक्ष्य है।

—२५५—

पाठ २८ वाँ

अभ्यासिया

(४३९)

घरों की नु बनिह है सोई है इति हाट ।
खोमुख बना बजार है बहु दुकान का ठाट ।
बहु दुकान का ठाट काऊ सावा काऊ भूरी ।
आदी भाति बिचार समु लै यही अन्तरी ।
घरने शान्दयाल साउधन पूछा न प्यारी ।
घर आदमी काम इन सब लूटन धार ।

(किमान)

आदी भाति सुधारै मन किमान बिजाय ।
न तु पात पदनायका समै गया जब खादत
सम गया जब खाद नहीं फिर गता है है ।
है है हाकिम पात कहा लष ताकी देई ॥
घरने 'शान्दयाल आल यज्ञि तु अथ पादी ।
साउगसालि समुहानि बिहगनि ते पिधि आदीय

मात्र का बराबर मूलाङ्क मिलना चाहिये । यह आवश्यक नहीं है कि मापका और मूल्य का मापन क परिमाण में अधिक अन्तर हो । परन्तु मूल्य का मापन कि निम्न और बलवान् क मापन क परिमाण में निम्नता जाना चाहिये । पुनः मूल्य मुख्य मूल्य बालक मूल्य का मूल्य म अन्तर होता है । एक लक्षण का यह कहना है कि यदि हम अन्तर्भाजन का इतना कुचले कि मूल्य में ही उसका पुनः मूल्य बनकर तार द्वारा वह मूल्य का मापन उत्तर मापन ही हम पाय म लक्षण मूल्य मूल्य का मूल्य से जाना जायत कर सकन है । इसमें स्पष्ट दृष्टांत प्रयोग किया है । मूल्य पुनः का ही द्वारा प्रतिपादित किया है । मूल्य उन्हें मुख्य मूल्य है । ऐसा दृष्टांत म मापन का परिमाण निम्न कर मूल्य कम है ।

अधिकतर दृष्टांत न लिखा है कि मूल्य पाठ निम्नान्तर मूल्य आवश्यकता म अधिक मूल्य है । यह एक पक्ष मापका बात है कि दृष्टांत का विना विना मापन ही मापना म मूल्य मूल्य है । मूल्य मूल्य के पर म पक्ष मूल्य अधिक मापन कर जान है चितना उनका मापन मूल्य पक्ष मूल्य है । मापन मापका का अर्थ मूल्य बात है ।

मापन क सम्बन्ध म ही बात पर मुख्य ध्यान देना चाहिये । एक ही यह कि मापन मूल्य सापेक्ष और मुख्य मूल्य ही और दूसरा यह कि मूल्य मापन मूल्य ही ही अधिक मूल्य । मापन मूल्य मूल्य मूल्य का मूल्य मूल्य का मूल्य है । ऐसा मूल्य म ही मापन मूल्य म मापन सार मापन मूल्य कर सकन ही ही मूल्य मूल्य का मूल्य मूल्य । मूल्य मापन मूल्य पक्ष है मापना सापेक्ष मापन है मूल्य मूल्य

छात्रों चाहिए। दूग म प्रतिदिन के साथ खान पीने के मामले में सबसे ज़रूरत की जाता है। ज्यादा म ज्यादा खानान की इच्छा अन्तरों में प्रायः दखा जाता है। लोग यह नहीं साचन कि भाजन आवनधारण करने के लिए आवश्यक है। खान पर यही तक ध्यान देना चाहिए जहां तक यह हमारे स्वास्थ्य में बाधा न डाले। खाने के बाद कितना हा छग पाचक औषध दूइते फिरते हैं। इस लगे पेट के नाता रोगा म फसकर जम भर दुख उठाने है।

जिन लोग का किमा कारण म अधिक भाजन करने का अभ्यास पड़ गया है उन्हें धार धार अपना आदत का सुधारना चाहिए और महान म हा उपवास अभ्यास करना चाहिए। इसमें लाम हागा। बहुत हिंदू चौमाम म एक हा समय भाजन करने का मन जन है। इसमें मुख्यतः पावन बितान का रहस्य भरा हुआ है। अबबरसान में हाग में नमा रहता है और सुपन्न दिखायो देता है ता पेट का पाचन नति दुर्ग पड़ जाता है। इस समय भाजन का मात्रा म कम कर लेना चाहिए।

कितना बार खाना चाहिए इस विषय पर भी बहुत मत भेद है। भारत म अधिकांश मनुष्य हा बार खाने हैं। नाम और बार बार खाने बाल आत्मा का पाव जात है। गंगाबा के कारण एक दल भी जिनका टोक तरह म अन्न नहीं मिलना इसे लोका की सन्धा भी इस दिन लगे म कराहो है। आजकल अमेरिका और इंग्लैंड में जसा समय स्थानित हा गया है जो लोग का कहता है कि हा बार म अधिक नहीं खाना चाहिए। इन समाज का सम्मति है कि हम सब कुछ नहीं खाना चाहिए। हमारा रात भर का नैद सूर्यक को गरज पूरे कर देतो है। इसलिये सब

कोडा मढ़ाणा का उमका तुलना एतिहास में मिलता कठिन है। सबसे पहल रामचन्द्रजी का सन्ना और अंगूठा सीताजी के पास और माताजी का शूद्रामणि रामचन्द्रजी के पास इनोने हा पद था। हा तुमानजी का धारना उनके प्रायनपुत्रात्म में पर पर प्रभुति है। अब व राम का सद्गुरु रामचन्द्रजी सीताजी के पास गये और माता नारायण के मय में उन्हें मुरत लो ज्ञान का कदा ना तुमानजी मुमकिलाकर बाव— 'माता! वासत्य के बाव हा तुम पमा कह रही हा। तिलाकविजेता भी रामचन्द्रजी का मैं हूँ। राव और उमका सारी मना मरमाने नगदर है। यदि छात्र हा ना राव का मार उमका सेना का द्विष्ट निश्चर कपन बाव पर बिगहर कपन रामचन्द्रजी के पास लय। सता न उन्हा कहनिया ना ना ज्ञाने रशरलक कपन का नष्ट करक रातम पशिषी का कपन पगक्रम दिखजा गिना जार समना कानवाप रावण के पुत्री का वम घाम परचाया। इस प्रकार रामचन्द्रजी का एक बहा चिन्ता तुमानजी ने मुर हा।

अब तुमानजी माता का सद्गुरु लकर रामचन्द्रजी के पास पहुच ना रामचन्द्रजी न रावण पर काक्रम कर दिया। उस युद्ध में तुमानजी न रामचन्द्रजी की बहा सहायता का था। राम ने उनके कार्यकीन म्यामिमि और धारता से प्रमत्त हाकर धातु का गाने देकर उनको गौरवधा बना।

तुमानजी न बहुत निजो तब राज्य दिया। किमा समय रहे सुय का कपन राज दस समार में बिरनि ना उग। उन्हे न मावा— 'अग।' इस समार में सब का उद्द के पछान् कपन हाता है। सुय का रहन्त इसक लिए प्रयत्न प्रमाद है।

मध्यम

(३१ मन्त्र सवैग)

जे समार-भाय-आग तन
 ठातन मुक्ति पथ को दोर ।
 आदा सेव करत मुख उपजत
 तिन ममान उत्तम नहिं और ॥
 इन्द्रादि जक पद बद्ध
 आ अगम तीरथ गुवि ओर ।
 आमे नित निवास गुन मइन
 सा धंसप जगन सिमोर ॥

॥३॥

अह मुनि काय बाय तर-तर वर
 उगम-उन सीखन चिनछेत ।
 अदित जान साखा गुन पल्लव
 मगज-गदुर मुक्त-पल्ल देत ॥
 तब निहि काय-दधानज उपजत
 महाभाह दल पवन समत ।
 सा मस्मान करत दिन अजर
 दाहत विरय सहित मुनि बत ॥

मध्यम

(पन्था ॥ ६॥)

मुक्तिनिन्दहाय मङ्गल मङ्गल,
 जगन्ते सुप्रसन्नचित्त अहो हिन्दो ।

[illegible]

बादगाह पारबल की बुद्धिमत्ता से बड़ा असन्न हुआ और
उमने यथोचित आदर सम्मान करके सबका विज्ञा किया ।

बच्चा 'बगामा तुम इनम स हिंस भला क हाना चाहत हा'



बाल्य के पिता तथा पृथ्वी न पहल उनका नसें मृष नीला की
 थी—इस उर्मना, हार्नेण्ड तथा इनमाक के कइ प्रान्त ललिये थ।
 घर सब के सब घरमर दरकर उमड़ खड़ हुए और उन जीते हुए
 प्रान्तों की छोन लने का चषा शुरू कर ली। इतना ही नहीं सबने
 मिलकर एक साथ गुप्त-चुप स्थाइन के बाहरा सुषों पर चढ़ाई कर
 हा किन्तु हमने बाल्य जरा भा चिन्तित न हुआ। उसने राज
 समा में सरदारा के सामन भाषण करत हुए कहा—‘मैंने
 निश्चय कर लिया है कि कभा अन्याय से युद्ध नहा प्रारंभ करेगा
 किन्तु इस सब साथ हा न्यायपूर्ण युद्ध का तब तक थद भा न
 करेगा जब तक कि अनन प्रभुओं का पूज्य रूप में मान न कर
 है। सबद पर्यं के एक बालक राजा के मुट से निकल हुए ये
 कैसे धारणापूर्ण गद है। जहा गरा पर बैठने हा उसन जर और
 मानु आदि जगता ज्ञानवर्ग के शिकार और राजसा जलसे शुरू
 कर लिये थ यह। हम भाषण के दूसर हा दिन से शिकार नाच
 रण और सर्वेक्षण गव-षण हा मथा। उसन साचा-शिकार
 खजना या अन्य किसी कु-यमने का खनन करना राजनीति नहीं
 है। इन कु-यों में गइकर अनक राजा अनन सर्वस्व में हाथ धा
 बैंग है। अन मुक्त पक्ष से हा खन पाना चाहिये। यह इनकी जगह
 सेनासबालन निगानवाचा तथा अन्य सैनिक कार्यो में समर्थ
 बितान लगा। बार-बार के समय के एक बड़ बाड़ा और सेना
 पति आदरसहित गुलाबर सना में रथान गय। फिर ना यह हम
 तरह शत्रुओं के पाहु पहा कि एक एक करके सबमें बदला दिया।
 इनमाक की सेना का बार बार खण्डा और उड़-सेना ऊबर
 इनमाक का मृमि पर ना उतरा। उस समय यह बदला लने तथा
 युद्ध करन के लिए इतना बेचैन हो रहा था कि सहास से उतरने

लड़ाई में बहुत साधारण निशानियाँ बरामद हुईं और उन निशानियों का पालन करता था। जमीन पर साँस देता। हथेली पाँच की पाँच पर बैठा था। जान दे। अन्त में वह कठिनता से लड़ाई में हारता था।



कठिन लड़ाई का अन्त

हथेली पाँच की पाँच पर बैठा था। जान दे। अन्त में वह कठिनता से लड़ाई में हारता था।



पाठ ३६ वाँ

प्रकीर्णकवच

(१)

जिह्व पुरख ता न विचार कर
अति आनुर है यह पाप उपाय ।
निज आनन्द-बद अनित्य
पदपद्म सो महि नह लगावै ॥
जब ताम उर दुख आन पर
तब मुन कृपा जग में मिलजावै ।
अब वाप आनुर पुनः काशन,
आन खग पर कूर रुदावै ॥

गम धर्म ममहार धम गम धर्म धार,
 जैन विघ्ननिघ्नकार धोमन सुधारक ।
 धौन्ये पुकार मादि भाज्य उदार ॥
 उदारकोविधार कल्पकृते-रस्यकारक ॥

कठिन नन्दो क मय

विष्णु धर्म इत्यादि अर्थ । अथ कठिन नन्दो क मय । (१२५) अर्थ ।
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।

पाठ ३७ वाँ

अमृत-शागी

(१)

सत्यन पुरष का उचित है कि उसे वह किसी साधु पुरष के
 स मन रस्य ध्वनन व जना हा वस ॥ अथ पुरष क साधन भा हाय
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।
 सत्यन पुरष के उचित है कि उसे वह किसी साधु पुरष के
 स मन रस्य ध्वनन व जना हा वस ॥ अथ पुरष क साधन भा हाय
 अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय । अथ कठिन नन्दो क मय ।

पाठ ३८ वाँ

स्पाटाद

१२०— 'गति जा गति' का अनुप्य का वहा हाकर मया
है बहुत ऊंचा है ।

गति— यह गति बहुत ऊंचा दिखकर) इस वृत्त में भी
ऊंचा है ।

१२१— 'स्पाटाद' वही वही ऊंचा काया मुना भा है ' नाह'
का अन्व मनुष्या में ऊंचा था किन्तु इस वृत्त में तो
नाचा है था ।

गति— तुम यह विविध मनुष्य इन नदों का उदाहरण देकर
जानें हा और वहा ना वृत्तों का । तुम्हारा वृत्त का
वृत्तिका ना नाह' मजा अब ठीक है तो बड़ा क्या
बताना हा । यह यदि बड़ा है ना बहुत लंबा वृत्तों
बढ़न हा । यह हा वस्तु में विविध धर्म नहा पाए जा
सकत ।

१२२— 'गति' वहा हा वृत्त में वहा पाए ठीक वहा उदा
ना विविध हा मजा है । विविध २ वृत्तों में
वहा ठीक वृत्तों का । यह वा वृत्तों का और
हमारा वृत्तों का वहा यह विविध वने हा
मजा है । वृत्त तुम्हारा वृत्तों का तुम्हारा हा वा
वृत्त ।

गति— वृत्तों का ।

१३०— तुम्हारे विचार में समार में एक भी सिद्धान्त एक भा सम्प्रदाय और एक भी दर सच्चा न होना चाहिए । क्योंकि किसी भी सिद्धान्त या सम्प्रदाय का सब लोग स्वीकार नहीं करते हैं । किसी सिद्धान्त की सत्यता सब या अधिक लोगों की मान्यता से नहीं होती । यह उससे निश्चित मिश्र वस्तु है । लोग शान या चारित्र्य का क्या स या करना प्रतिष्ठा के लिए सब सिद्धान्त को न मानकर मिश्र सम्प्रदाय स्वीकार करते हैं । यह सब है कि किसी २ धर्मार्थ न स्वाभाविक का असत्य बतलाया है परन्तु निम्न विद्वानों ने उनकी इस कृति को हास्यास्पद ही समझा है ।

शान्ति— अच्छा ये बातें जानो । तुम कहते हो स्वाभाविक से वैराग्य का विकास होता है । सा कैसे ?

१३०— सुना । किसी जगह थाड़ में अंध बड़े थे । माग्य सब वहाँ एक हाथी का निहत्ता । सब के सब हाथी के निहत्ते पशु । किसी ने सूँघ पकड़ा तो किसी ने कहा किसा ने जाल पकड़ा किसा ने खाँसे, किसी ने पूँछ पकड़ा तो किसी ने धोत । सबने समझा हमने हाथी पकड़ लिया है । सब अपना ४ हाथ का सच्चा समझ सातुए हा गये । कान्हातर में हाथी का सच्चा दिडो । जिसने पूँछ पकड़ा था वह बाड़ा-हाथी रस्सा खींचता होता है । सूँघ पकड़ने वाला दूसरा अधा उल्टा बाँध काट कर दबा—मूँड निकाल मूँड । हाथी रस्सा खींचता नहीं है वह तो सब खींचता होता है । खींचते खींचते—सबों का र नहीं देते हाँ क्या

पाठ '४२ वाँ

आदर्श दम्पति

प्रातः काल का समय था। नियमित अभ्यास का अनुसार गुरुदेव का व्याख्यान का समय हो रहा था। धावक और धावि कार्मा के समूह के समूह उपाध्य का भार बढ़ उल्लेख ज्ञान था। सुख की दृष्टि में यह भाग में गढ़ा हुआ था तावत इसलिए कि पदा धावत से किसी और ज्ञान तु का हिता से था। वह गढ़ में निर्गिर पदा। 'भूतो का जात नुक रूप मय के मरने के समान मान्य मान्य है। जिस व्यक्ति के भार में हो भक्त गण है। यद्यपि में मनाहरी महल नरना सिर ऊंचा किए लड़ था। कि तु इनमें से कोई उनका भार मोक्ष उठाकर भी न गवता था जिससे मात्र प्रकट होता था कि इनकी दृष्टि में गुरुमति और धर्म व सामान इन महली का हुंदा भी महत्त्व नहीं है। जो नाग उपाध्य में पहुँचते व गुरु महाराज की विधिद्वारा व रत्ना नमस्कार काक उनका सुख साता पूरे हर दिशावार का पालन कर नियत स्थान पर उठते जाते थे।

व्याख्यान का समय हो चुका। गुरु महाराज ने अपने मुख केन्द्र से उपदेश-वाक्य का पत्रा कर्ता प्रारम्भ किया। धोता जन बहुधाव से उसे पान करने लग। उनके चरित्र प्रसन्न थे माना उप देशमूर्ति का पत्र करके अनमन्यमान्य मान्य में उनका स्वयं मनोरथ पूरा हो गया है। महाराज ने ध्यान प्रत्यर्थ की महिमा बताई। वह कहने लगे-भद्रजारा। प्रत्यक्ष मान्यतावन का गान्धिका प्रथम सापान है। जिसने इस वासना का ज्ञाता उसे उपचार हिन्दिया का ज्ञाता-पदार्थ सुगम है। धावत पक्ष पक्ष इस वासना का

पृथिवी यज्ञ बढता जाता है। किसी वृत्ति को काबू में करने के लिए धार २ प्रदान करना चाहिये।

‘गुरुता’ कायदा करना यथाय है। संयम तन और मन को उन्नत बनाकर आध्यात्मिक जीवन का साक्षात्कार कराता है। मैं इस प्रकार का जीवन व्यतात करने के लिए प्रचार हा रही हूँ क्या इसमें आप सहायता न करें?”

‘अच्छा मेरा कहना मानागो’।

‘जा हा’ कहकर बालिका महाराज की ओर उलझता से देखने लगी। ‘बालिका’ तू रतना प्रतिज्ञा कर कि— ‘दृष्टव्य में मन गचन और काय से जीवन पर्यन्त गुह्य द्रव्य पार्ष्णा।

“गुह्यता” कायदा रसाकार है।” कहकर बालिका सुशी-सुशी बजा गी।

बालिका का नाम विजया था। उसका पिता का नाम धना-वद था। धनावद कच्छदेश के नामी सठ य।

+ + + + +

उसी गिर न एक प्रहसत सठ रहते य। उनके जड़क का नाम विजयकुमार था। विजयकुमार बहुत प्रतापी था। उसने नौ पक्ष दिन गुह्य महाराज के धामुख से द्रव्य का मह्य सुन कर गुह्यता में द्रव्य पालन करने की प्रतिज्ञा टा।

त्रिष दिन विजयकुमार प्रतिज्ञा लेकर घर लौटा उसा दिवस रात न उसका सगरी का पचा दृष्ट। व. बान—“विजय” कायदा रसा नपर में रहने वाला धनावद केहा के पदा से स—ई को सठ कहा य. है। गुह्यता कायदा है।”

022

(6)

(5)

